

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 34

वर्ष अंक : 3

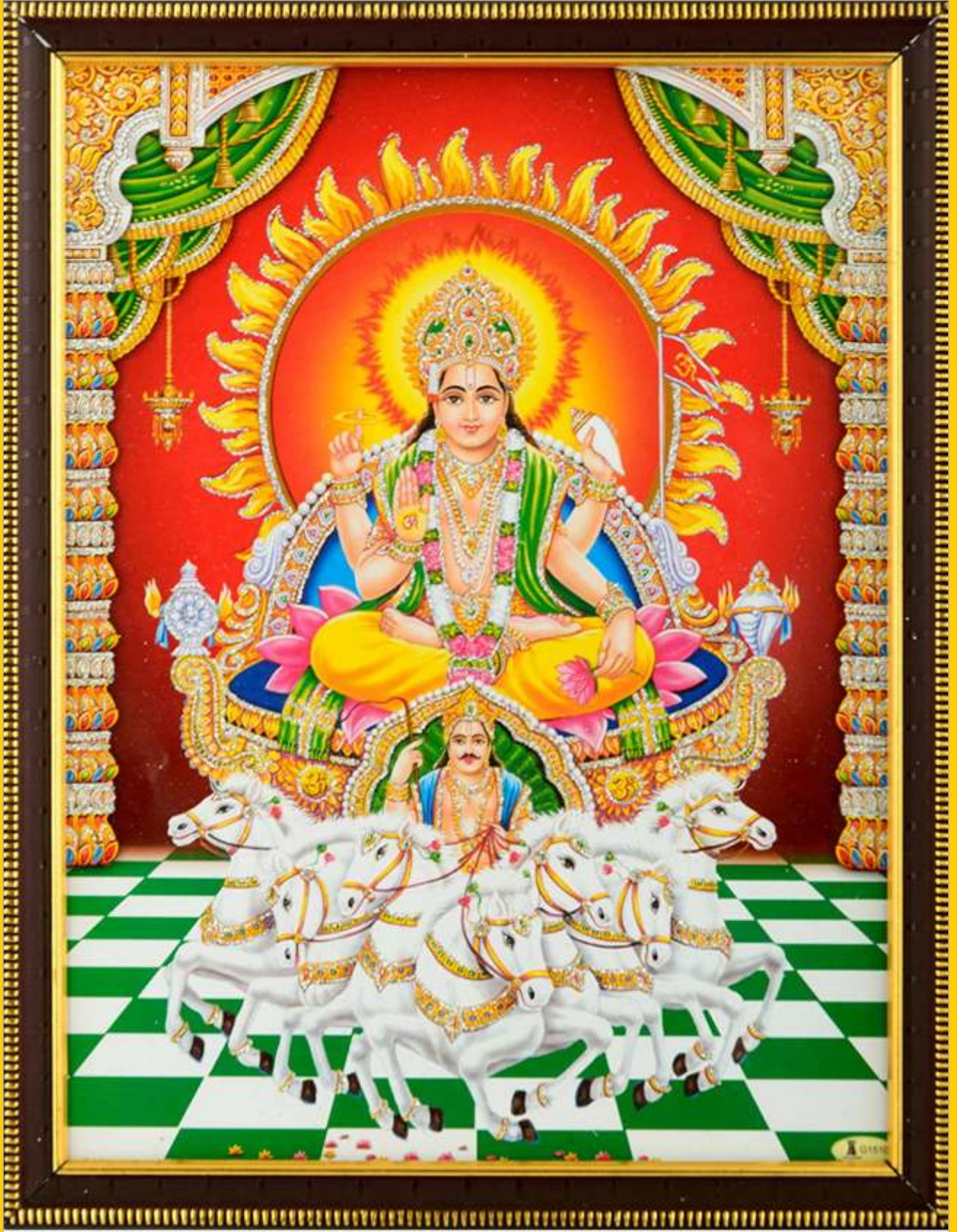
जुलाई से सितम्बर 2020

इस अंक के आकर्षण

- सब कर्मों का खेल
- गिलोय एक अद्भुत औषधि
- सुखमय दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष
- सुखी परिवार की कल्पना
- रत्न धारण करो- भाग्य बदलो
- जीवन में धैर्य की आवश्यकता
- हृदय रोग के कारण और बचाव
- पूर्व संचित कर्म ही भविष्य निर्धारण में सहयोगी
- ज्योतिष से विज्ञान का क्या है सम्बन्ध
- हमारा दिशा दर्शक फलित ज्योतिष
- त्रैमासिक भविष्य फल, व्रतपर्व एवं शुभ मुहूर्त तथा अन्य सभी स्थायी स्तम्भ



मूल्य - 30 रु.



ध्येय : सदा सवित्मण्डलमध्यवर्ती, नारायण : सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी, हारी हिरण्यमयवपुर्धृतशङ्खचक्र : ॥
नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे, जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे, विरञ्चिनारायणशङ्करात्मने॥



जीवन वैभव

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका

स्थापना वर्ष : 34, अंक-3, जुलाई-सितंबर 2020

●
संपादक

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय



●
सहायक संपादक

अरविन्द पाण्डेय

आशुतोष पाण्डेय



●
कानूनी सलाहकार

श्री के.बी. उपाध्याय



●
सलाहकार मण्डल

श्री डी.पी. दुबे (आय.ए.एस.), श्रीमती पुष्पा चौहान,

श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई),

सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय



प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्प्लेक्स

महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मान्यते हैं।)

प्रकाशित लेखों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति	—	30 रुपये
वार्षिक	—	100 रुपये
त्रैवार्षिक	—	300 रुपये
आजीवन	—	1800 रुपये

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पृष्ठ क्रं.
1.	वंदना	2
2.	अमृत घट	4
3.	वैभव दर्शन	5
4.	सब कर्मों का खेल	7
5.	गिलोय एक अद्भुत औषधि	9
6.	पेट्रोल पंप व्यवसाय हेतु ज्योतिषीय योग एवं ग्रह योग का विवेचन	11
7.	सुखमय दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष	13
8.	सुखी परिवार की कल्पना	15
9.	रत्न धारण करो - भाग्य बदलो	17
10.	जीवन में धैर्य की आवश्यकता	19
11.	वास्तु शास्त्र परिचय	21
12.	हृदय रोग के कारण और बचाव	23
13.	'रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेहु जो जाननिहारा'	25
14.	प्राचीन संस्कृति के संस्कार सुखी जीवन का आधार	27
15.	पूर्व संचित कर्म ही भविष्य निर्धारण में सहयोगी	29
16.	ज्योतिष से विज्ञान का क्या है सम्बन्ध	31
17.	हमारा दिशा दर्शक फलित ज्योतिष	33
18.	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
19.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
20.	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011(म.प्र.) से मुद्रित, संपादक: डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादक: स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव





वन्दना



शिवमानस पूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥1॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं
पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं ताम्बूलं
मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥2॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलम्
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तवविभो पूजां गृह्याण प्रभो ॥3॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वाङ्गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥4॥

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसंवापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेवशम्भो ॥5॥

भावार्थ : हे दयानिधि! हे पशुपते! हे देव! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्नावलि विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरीकागन्धसमन्वित चन्दन, जुही, चंपा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब मानसिक (पूजोपहार) ग्रहण कीजिए ॥1॥ मैंने नवीन रत्न खंडो खचित सुवर्णपात्र में घृतयुक्त खीर, दूध और दाधिसहित पांच प्रकार का व्यंजन, कदली फल, शरबत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल- ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किए हैं, प्रभो! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिए ॥2॥

छत्र, दो चंवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदङ्ग, दुंदुभी के वाद्य, गान और नृत्य, साष्टांग प्रणाम, नाना विधि स्तुति- ये सब मैं संकल्प से ही आपको समर्पण करता हूँ प्रभो! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिए ॥3॥ मेरी आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वती जी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मंदिर है, संपूर्ण विषय-भोग की रचना आपकी पूजा है, निद्रा समाधि है, मेरा चलना फिरना आप की परिक्रमा है, तथा संपूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं, इस प्रकार मैं जो भी कर्म करता हूँ वह सब आप की आराधना ही है ॥4॥ मैंने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, करण, नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हो, और विहित हो अथवा अविहित, उन सब को आप क्षमा कीजिये। हे करुणासागर श्री महादेव शंकर! आपकी जय हो ॥5॥



सम्माननीय पाठक बंधु

जुलाई से सितम्बर 20 का वर्षाऋतु अंक आपके हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष है। पूरे विश्व में कोराना की महामारी का कोहराम अभी भी जारी है। व्यक्ति सामाजिक दूरी बनाते हुए स्वच्छता पर सजग रहते हुए अपना जीवन जी रहा है, भारतीय प्राचीन संस्कृति और संस्कार की शिक्षा पहले से ही हमारे ऋषि महात्माओं ने दी है।

शरीर और हमारा भौतिक वातावरण की शुद्धता के साथ ही मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के उद्देश्य से ही जीवन वैभव पिछले 34 वर्षों से प्रयास रत होकर पूरे परिवार के लिए उपयोगी साहित्य इस पत्रिका के माध्यम से प्रदाय करता रहा है। जीवन वैभव के इस अंक में स्वास्थ्य, नीति, चरित्र निर्माण, अध्यात्म, फलित ज्योतिष पर गुढ़ता लिए हुए वरिष्ठ लेखकों के आलेख सम्मिलित करते हुए नियमित स्तम्भ भविष्यफल, व्रतपर्व, शुभ मुहूर्त आदि अति उत्तम तरीके से प्रस्तुत किए गए हैं जोकि पाठकों को रुचि कर प्रतीत होंगे इसमें संदेह नहीं है।

सभी पाठक बंधु से अनुरोध है कि इस अंक में प्रस्तुत शिक्षाप्रद आलेख पढ़कर अपने जीवन में चरितार्थ करते हुए शारीरिक और मानसिक रूपसे स्वस्थ होकर सुखी जीवन के सोपान पर बढ़ते जाने की कामना प्रकाशन करता है।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक





अमृत घट



1. प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए सदा प्रिय वचन ही बोलना चाहिए। बोलने में क्या दरिद्रता।
- चाणक्य
2. अपने प्रति दूसरों के जिस व्यवहार को तुम पसंद नहीं करते, वैसा ही व्यवहार स्वयं भी दूसरों के प्रति मत करो।
-कल्पयूशियस
3. महान बनने की सबसे पहली सीढ़ी नम्रता है, नम्रता वह अमोघ अस्त्र है जो हमें सफलता की राह दिखाता है और मानव को देवता बना देता है।
- रस्किन
4. संसार में जितने दुख हैं, सब क्षण स्थाई हैं। वे हमारी मूर्खता से पैदा होते हैं। जब तक हमें उनकी असलियत नहीं मालूम हो जाती, तभी तक हम उन पर काबू नहीं पा सकते।
-भगवान बुद्ध
5. आपत्तियों से आदमी की परख होती है, और महत्व प्रकट होता है। अतः धीरता से मुकाबला करो।
- गुरु नानक देव
6. आवश्यकताएं कम करें। आवश्यकता जितनी कम होगी, उतना ही अधिक सुख होगा। - स्वामी रामतीर्थ
7. अपने माथे से झूठा कलंक का टीका हटाने, अपनी झूठी बदनामी को मिटाने का सबसे बड़ा इलाज यह है कि उससे बिना घबराए अपने सच्चे मार्ग पर चलता जाए।
-स्वामी विवेकानंद
8. जीवन की सफलता संचित धन-राशि से न आकी जाकर उन कार्यों से आकी जाएगी जो समाज के कल्याण के विचार से किए गए हो।
- विनोबा भावे
9. चाहे तुम्हारा काम कितना ही छोटा परिणाम निकलने वाला क्यों ना हो भगवान के नाम पर उसे अधूरा ना छोड़ो, उसे आखिरी नतीजे और मंजिल तक पहुंचा दो। उसे छोटा या तुच्छ न समझो। - सरदार पटेल





वैभव दर्शन

दूसरों की भूल देखने की प्रवृत्ति

वास्तव में यह विषय महत्वपूर्ण है। मनुष्य में यह एक कमजोरी है कि वह अपनी भूलों और गलतियों की ओर तो ध्यान नहीं देता लेकिन दूसरों के दोष का वर्णन करता है। - संपादक



स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

दूसरों के दोष निकालना एक ऐसी कमजोरी है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी कमजोरियों पर पर्दा डाले रखना चाहता है परंतु वह दोषपूर्ण है संभवतः इस प्रवृत्ति को उजागर करने के लिए ही संत कबीर ने कहा है-

बुरा जो ढूँढने को चला, बुरा न मिलता कोय।
जो दिल खोजा आपुना, मुझसे बुरा न कोय ॥

कहने का आशय है कि हम दूसरों की भूले, बुराइयां देखने की बजाय अपने अतः करण में देखे कि हमारे अंदर कौन-कौन सी बुराइयां हैं कबीर ने अपनी बुराइयां पहले देखी एवं सुधारी।

वास्तव में विचारवान वे हैं, जो दूसरों की भूले न देखकर पहले स्वयं अपनी त्रुटियां, दोष एवं दुर्गुणों को निकालने का प्रयत्न करते हैं।

जिस प्रकार एक-एक बूंद से पाप का घड़ा भर जाता है उसी प्रकार थोड़ी-थोड़ी त्रुटि पूर्ण दोष युक्त बातों का समावेश होते रहने पर मनुष्य कुछ समय में पाप के पंक याने कीचड़ में डूबता जाता है। इस कारण सदैव ध्यान रखना चाहिए कि तनिक भी बुराई (दोष) को हमारे पवित्र मन जहां की प्रभु विराजमान है, नहीं आने देना चाहिए। जिससे हमारा मन मंदिर दूषित नहीं हो सके।

यदि कोई त्रुटि या भूल पहले हो गई है तो उसको लेकर अधिक पछताना, दिन भर दुखी रहना अपने को असहाय, पतित समझना छोड़कर भविष्य में ईमानदार, सच्चरित्रवान तथा नैतिकता से जीवन जीने का संकल्प लीजिए। परिस्थिति वश यदि त्रुटि हुई है तो उसे सुधार लीजिए।

भूल को स्वीकार करने से आत्म संतोष मिलेगा। भविष्य में आप उस मार्ग में नहीं जाएंगे। याद रखें आगे बढ़ने वाला व्यक्ति कभी भी पीछे पलट कर नहीं देखता है।

एक विद्वान ने कहा है कि आप कठिनाइयों से बचना या छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने भीतर दोषों को ढूँढ निकालिए और उन्हें नष्ट कर बाहर निकालने में जुट जाइए। दुर्गुण रूपी कांटों को हटाकर उनके स्थान पर अपने हृदय उद्यान में सद्गुणों के पुष्प वाले पौधों को बोईये।

जिस अनुपात में आप यह कार्य कर सकेंगे, उसके अनुसार ही आप विपत्ति से छूटकर स्थाई उन्नति की ओर अग्रसर होते जाएंगे।

इसी कारण आप अपने आपको पहचाने एवं एक-एक करके अपनी भूलों को सुधारते हुए एक अच्छे मानव के रूप में समाज में अपनी पहचान बनाए।





अरविंद पाण्डेय/प्रदीप पटैरिया

जन्म पत्रिका के अंतर्गत यदि हम रोजगार की चर्चा करें तो हमारे समक्ष सभी ग्रहों नक्षत्रों के प्रभाव के बारे में जानकारी होना आवश्यक है। किसी भी व्यक्ति के बारे में दशम भाव महत्वपूर्ण है लेकिन कर्म से वह लाभ प्राप्त कर रहा है या नहीं इसके लिए धन भाव एवं एकादश भावों के बारे में भी जानकारी होना आवश्यक है। यदि दशम भाव के स्वामी मित्र द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के ग्रह हैं ऐसी स्थिति में कर्म के प्रति व्यक्ति संतुष्ट रहेगा अन्यथा अपने कर्म से असंतोष रहकर अधमने से कार्य करते हुए जीवन व्यतीत करेगा। कार्य का पूर्ण होना और उसमें सफलता या असफलता प्रदान करने में नवम भाव जो कि भाग्य भाव कहलाता है कि महती भूमिका होती है क्योंकि वह दशम यानि कर्म का व्यय भाव है अर्थात् कर्म पूर्ण होना तत्पश्चात् कर्म का धन भाव लाभ स्थान अर्थात् एकादश भाव है जो कि किए गए कर्म का परिणाम लाभ के रूप में प्राप्त करता है। कर्म करने में अपनी बुद्धि मानसिकता का भी उतना ही महत्व है जितना कि भाग्य भाव का है अतएव कार्य करने में बुद्धि लगना अपनी बुद्धि और आत्मबल से कार्य को सफलता तक ले जाने वाला भाव पंचम भाव होता है जिससे व्यक्ति के अपनी बुद्धि बल से सफलता प्राप्त करता है।

यदि बाल्यकाल से ही इन जन्मपत्रिका के आधार पर ग्रहों का सम्यक अध्ययन करते हुए कार्य के अनुरूप उसकी शिक्षा प्रदाय करने की व्यवस्था की जाती है तो वास्तव में उस बालक की सफलता का प्रतिशत अधिक प्राप्त होता है। तथा इसका संपूर्ण लाभ परिवार एवं समाज को मिल सकता है।

अनुभव से परिपूर्ण ज्योतिषज्ञ को बालक की जन्मकुंडली का सम्यक अध्ययन के पश्चात् उस बालक के भावी जीवन के लिए विषय का चुनाव सही होने से भटकाव नहीं होकर वह बालक आरंभ से ही होनहार हो जाता है।

ग्रह योग एवं रोजगार



उदाहरणार्थ गणित विद्या, रसायन विद्या, संगीत कला, औषधि विद्या, जीवन जंतु विद्या, वनस्पति विद्या, शारीरिक अंगों की जानकारी से संबंधित ज्ञान की विद्या आदि के लिए प्रयुक्त होने वाले ग्रह नक्षत्रों का समुचित अध्ययन करते हुए जन्मांग के ग्रहों से मेल खाने वाले विषयों का पठन-पाठन करना चाहिए।

बुध ग्रह : जिनके विद्या भाव अर्थात् पंचम भाव से संबंध है तथा दशम भाव एवं एकादश भाव पर बुध के नक्षत्र वाले ग्रहों का प्रभाव हो ऐसा व्यक्ति वाणिज्य कार्य में प्रबल होगा यदि बुध ग्रह प्रबल है बुध की दशा अथवा बुध के नक्षत्र वाले मित्र ग्रह की दशा का प्रभाव है तो बालक वाणिज्य विषय में अपना ज्ञान प्राप्त करेगा तथा उत्तरोत्तर वाणिज्य का ज्ञान प्राप्त करने वाला विषय चार्टर्ड अकाउंटेंट अथवा व्यवसाय प्रबंधन का अध्ययन करेगा और उसमें सफलता भी हासिल करेगा। वाणी अथवा संगीत अथवा कलात्मक कार्यों के करने से संबंधित विषय भी अध्ययन कर सकता है।

मंगल अथवा शनि ग्रह यदि पंचम भाव पर स्थित हो दृष्टि हो अथवा पंचमेश के साथ संबंध रखता हो ऐसी स्थिति में जातक गणित, विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, राजनीतिक अथवा न्यायिक ज्ञान से संबंधित विषयों का अध्ययन करता

है एवं उसमें सफलता प्राप्त करता है सूर्य-मंगल, मंगल-बुध अथवा सूर्य, शुक्र बुध की पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव, द्वितीय भाव, दशम, एकादश भाव से संबंध हो तो वह व्यक्ति तकनीकी ज्ञान की तरफ प्रेरित होता है।

शुक्र ग्रह यदि पंचम भाव अथवा पंचमेश के साथ युति अथवा दृष्टि संबंध रखता है ऐसी स्थिति में जातक कला और सौंदर्य प्रधान सामग्री से संबंधित ज्ञान अर्जित करता है, बुध शुक्र की स्थिति यदि द्वितीय भाव में जो कि वाणी भाव भी कहलाता है, होने पर जातक वाणी संबंधित कार्य करने की शिक्षा ग्रहण करता है, ऐसा जातक कानून की पढ़ाई भी कर सकता है। इसके साथ ही यदि राहु की स्थिति बलवान हो तो जातक सफल वकील बन सकता है। बुध, गुरु एवं शुक्र के बलवान होने वाले जातक को न्यायिक विषय पढ़ना भी हितकर हो सकता है।

उच्च स्वराशि का मंगल हो, सूर्य मंगल विद्या भाव में हो, शुक्र लाभ भाव, कर्म भाव अथवा भाग्य भाव से संबंध रखता हो बृहस्पति का चंद्रमा के साथ संबंध हो अथवा दृष्टि संबंध हो तो ऐसे जातक को चिकित्सा संबंधी शिक्षा ग्रहण करने में भी व्यक्ति का निखार आ सकता है।





डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

यह विषय बहुत गहन है, व्यक्ति कहता है मैंने कोई अशुभ कार्य नहीं किया है फिर भी मैं कष्ट क्यों उठा रहा हूँ। परन्तु हमें अपने केवल इसी जन्म के कर्म ही नहीं आंकना चाहिए, पूर्व संचित कर्म यदि अच्छे हैं तो निश्चित ही उसका फल उत्तम होगा क्योंकि फल देने का कार्य विधाता का है वह सदा कर्म के फल का समुचित निराकरण करता है। अतः स्पष्ट है कि व्यक्ति अपने इस जीवन में कर्मों के आधार पर क्या संचित कर्म की पूंजी जमा करके आया है, उसी के आधार पर उसका यह जीवन निर्भर करता है साथ ही इस जीवन में किए गए शुभकर्म अगले जीवन के लिए मापदण्ड निर्धारित करते हैं तथा शुभ जनहित कर्मों से तनाव रहित जीवन व्यतीत होता है।

अपने कर्मों के अनुसार ही व्यक्ति जब इस लोक से विदा होता है इसके पश्चात अंतरिक्ष में अपना समय व्यतीत करते हुए कर्मों के आधार पर ही आगामी जीवन के लिए ऐसे परिवार में जन्म लेता है जहां सुख और दुख दोनों अपने कर्म के आधार पर प्रकृति रूप से ईश्वर उस जीव को अनुभूति देते हुए ऐसे उस नक्षत्र में जन्म ले रहा होता है जोकि कर्मों के आधार पर उसे शुभ अथवा अशुभ ग्रहों के नक्षत्रों से युक्त लग्न और पापग्रहों/शुभग्रहों के नक्षत्र की दशा जन्म के समय भोगने के लिए प्राप्त होती है। इस जीवन में विगत जीवन के अशुभ कर्म होने के कारण व्यक्ति को कड़ी मेहनत के बाद भी शिक्षा और व्यवसाय अनुकूल परिस्थिति से प्राप्त नहीं हो पाते। तथा कष्ट उठाने पड़ते हैं। इसके विपरीत शुभ कर्म सेवाभावना तथा जन हित के कार्यों से जुड़ा व्यक्ति को इस जीवन में शुभ ग्रहों नक्षत्रों के प्रभाव से अच्छे समृद्ध परिवार में जन्म लेकर जीवन की सुख समृद्धि प्रारंभिक जीवन से ही हो जाती है, तथा प्रत्येक कार्य आसानी से

सब कर्मों का खेल



होकर प्रगति करता रहता है।

केवल पूर्व जन्म का ही नहीं वर्तमान जीवन में भी व्यक्ति अशुभ कर्म करेगा तो उसका फल उसको नकारात्मक प्राप्त ही होगा। कर्म भाव का द्वितीयभाव एकादश भाव होता है जोकि अपने कर्म से कमाया हुआ धन/आय कह लाती है यदि हमारे कर्म ही नकारात्मक होंगे तो हमारे कर्मों का धन भी नकारात्मक ही होता है। अंत तुलसीदास जी में भी अपने अनुभव से लिखा है।

जो जस करहिं सो तस फल चाखा।

काल गणना के ज्योतिष के सिद्धांत के अनुसार ब्रह्मा जी का कल्प, मन्वन्तर और युग के साथ ही जीव (आत्मा) की संख्या भी एकयुग के लिए नियत है। वह अपने विभिन्न योनियों में जन्म लेकर जीव (प्राण) कभी मरता नहीं है। उसे केवल अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न प्रकार के प्राणी का शरीर प्राप्त होता है। पूर्व जन्म में किया हुआ कार्य किसी का धन हड़प लेना, किसी का भवन हड़प लेना, किसी को झूठ बोलकर निंदा करना, धोखा देना आदि कर्म जिसके साथ भी किए जाते हैं। इसका प्रतिफल इस जन्म में उन्हें प्राप्त होता है। पुत्र के रूप में उत्पन्न होकर परिवार में

पिता के धन का उपयोग करना बिना कुछ काम किए जमा जमाया व्यापार प्राप्त हो जाना आदि सम्मिलित है। कुछ कर्म जिनमें कोई लेना-देना शेष रहता है ऐसी स्थिति में व्यक्ति इस जन्म में शत्रु बनता है तथा इस जन्म में जमीन हड़प लेता है। धन हड़प लेता है अथवा पूर्व जन्म अथवा अपने पीछले जीवन में किए हुए अनाचार का बदला इस जन्म में चुकाना होता है।

कुछ धर्म प्राण आत्माएं ऐसी होती हैं जो जीवन में सभी के हितकारक कार्य करती हैं स्वयं को लाभ मिले या नहीं मिले परमार्थ में ही जीवन व्यतीत करते हैं ऐसे धर्मप्राण व्यक्ति बृहस्पति, बुध अथवा शुभ चंद्र से प्रभावित होते हैं जिनके केवल आशीर्वाद मात्र से कल्याण होता है।

अन्य ग्रह जोकि इन शुभग्रहों के नक्षत्रों वाले होते हैं तथा शुभ ग्रहों के नक्षत्र के लग्न में इस संसार में आते हैं उनका जीवन दुराचारी नहीं होता। वे अपने जीवन में शुभ संकल्प के साथ सात्विक कर्म में संलग्न रहते हैं, भगवान कृष्ण ने गीता में अपने वचन में कहा है कि ऐसे सतोगुणी व्यक्ति में मैं निवास करता हूँ। तथा सदा* उनसे सत्कर्म कराता हूँ। स्पष्ट है कि कर्म का फल ही व्यक्ति को भोगना होता है। नवमभाव धर्म भाव जिसका द्वितीय भाव कर्म है अर्थात् संस्कारित धर्म परायण व्यक्ति के कर्म भी संस्कारित होंगे और दशमका द्वितीय भाव आय भाव होने से सत्कर्म का फल में यश और सुख मिठास होगा ही। अन्यथा इसजन्म का अन्याय पूर्वक बटोरा धन और कर्म का निपटारा इसी जन्म या अगले जन्म में दुख देखकर भी चुकाना ही पड़ेगा क्योंकि कलियुग अंत तक सवकी आत्मा (जीव) का जीवन रहेगा ही। अतएव प्रत्येक प्राणी को चाहिए कि वह अप्रत्यक्ष रूपसे प्रभु की नजर में है यह समझकर अपने कर्म को सदाचार पूर्वक करता रहे ताकि जीवन सुख और सम्पन्नता से व्यतीत होकर आगामी जीवन की रूपरेखा भी धनात्मक रूपसे प्रभु द्वारा तय हो सके।





दर्पण से वास्तु सुधारें

वास्तुविद् रमाशंकर नामदेव, जबलपुर

वास्तु में दर्पण का बहुत अधिक महत्व है, गलत जगह लगाया गया दर्पण आपकी स्थिति खराब कर सकता है। कहीं से दर्पण पर मुझे कुछ अच्छे विचार मिले थे जिन्हें मैं आप लोगों तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा हूँ:-

1. दर्पण एक ऐसा प्रतिबिंब है जो नकारात्मक ऊर्जा को रिफ्लेक्ट करता है, तथा संग्रहित करके उसे नष्ट करता है, अथवा उसे सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित भी कर देता है, दर्पण को जीवन का प्रारूप माना जाता है।
2. दर्पण सुख, समृद्धि देता है, तो यह नुकसान/हानि व असफलता भी देता है, अर्थात् यह दोनों काम करता है।
3. दर्पण तीन प्रकार के होते हैं- प्रथम **Concave Mirror** अवतल दर्पण, द्वितीय **Convex Mirror** उत्तल दर्पण, तृतीय **Looking Glass** सामान्य दर्पण।
4. अवतल दर्पण नकारात्मक ऊर्जा को संग्रहित करके नष्ट करता है।
5. उत्तल दर्पण नकारात्मक ऊर्जा को दूर फेंकता तथा सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करता है।
6. सामान्य दर्पण अपने आप में प्रतिबिम्ब बनाकर दूरी बढ़ाता है।
7. दर्पण सदैव वर्गाकार, आयताकार, षटकोणाकार, अष्टकोण गोल ही लगाना चाहिए। अन्य प्रकार के दर्पण जैसे टेढ़ा-मेढ़ा, नुकीला, तिकोण, खंडित, धब्बेदार, देखने में विकृत स्पष्ट न दिखलाता हो, तेजधार या आधा मुंह दिखाते हो, नहीं लगाना चाहिए। दर्पण जितना हल्का एवं बड़ा होगा उतना ही अधिक लाभकारी होगा।



8. दो या तीन दर्पण को मिलाकर नहीं लगाना चाहिए, दर्पण सदैव एक ही तथा बड़ा लगाना चाहिए।
9. गोल दर्पण सूर्य तथा जल का प्रतिनिधित्व करता है।
10. मकान, फैक्ट्री तथा कमरे में उत्तर दिशा में पूर्व की ओर एवं पूर्व दिशा में उत्तर की ओर व ईशान क्षेत्र में लगाने से इस क्षेत्र को बढ़ाकर सकारात्मक उर्जा उत्पन्न कर सुख-समृद्धि तथा लाभ दिलाता है, इसके विपरीत दर्पण लगाने

से हानि, कष्ट व विपत्ति देता है।

11. यदि कमरे का ईशान कटा हो तो ईशान में दर्पण लगाने से ईशान दोष दूर होता है इस दिशा में वर्गाकार व आयताकार दर्पण ही लगाना चाहिए, गोल दर्पण हानि पहुंचा सकता है।
12. ईशान क्षेत्र में दर्पण सदैव नीचे की ओर लगाना चाहिए।
13. यदि कमरे में पूर्व या उत्तर की ओर खिड़की न हो तो पूर्व तथा उत्तर की ओर दर्पण लगाने से दरवाजा या खिड़की का काम करता है।
14. उत्तर पूर्व की तरफ लगाने वाले दर्पण की पिछली सतह पर पॉलिश का रंग लाल, गुलाबी अथवा पीला नहीं होना चाहिए यदि हरा, नीला या क्रीम रंग हो तो ज्यादा उत्तम रहता है। जानकारी के अभाव में गलत जगह दर्पण लगाने से हानि होती है।
16. शयनकक्ष में दर्पण नहीं होना चाहिए।





गिलोय एक ही ऐसी बेल है, जिसे आप सौ मर्ज की एक दवा कह सकते हैं। इसलिए इसे संस्कृत में अमृता नाम दिया गया है। कहते हैं कि देवताओं और दानवों के बीच समुद्र मंथन के दौरान जब अमृत निकला और इस अमृत की बूंदें जहां-जहां छलकीं, वहां-वहां गिलोय की उत्पत्ति हुई।

इसका वानस्पिक नाम (Botanical name) टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया (tinospora cordifolia) है। इसके पत्ते पान के पत्ते जैसे दिखाई देते हैं और जिस पौधे पर यह चढ़ जाती है, उसे मरने नहीं देती। इसके बहुत सारे लाभ आयुर्वेद में बताए गए हैं, जो न केवल आपको सेहतमंद रखते हैं, बल्कि आपकी सुंदरता को भी निखारते हैं। आइए जानते हैं गिलोय के फायदे

गिलोय बढ़ाती है रोग प्रतिरोधक क्षमता

गिलोय एक ऐसी बेल है, जो व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा कर उसे बीमारियों से दूर रखती है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने का काम करते हैं। यह



गिलोय एक अद्भुत औषधि



खून को साफ करती है, बैक्टीरिया से लड़ती है। लिवर और किडनी की अच्छी देखभाल भी गिलोय के बहुत सारे कामों में से एक है। ये दोनों ही अंग खून को साफ करने का काम करते हैं।

ठीक करती है बुखार

अगर किसी को बार-बार बुखार आता है तो उसे गिलोय का सेवन करना चाहिए। गिलोय हर तरह के बुखार से लड़ने में मदद करती है। इसलिए डेंगू के मरीजों को भी गिलोय के सेवन की सलाह दी जाती है। डेंगू के अलावा मलेरिया, स्वाइन फ्लू में आने वाले बुखार से भी गिलोय छुटकारा दिलाती है।

गिलोय के फायदे डायबिटीज के रोगियों के लिए

गिलोय एक हाइपोग्लाइसेमिक एजेंट है यानी यह खून में शर्करा की मात्रा को कम करती है। इसलिए इसके सेवन से खून में शर्करा की मात्रा कम हो जाती है, जिसका फायदा टाइप टू डायबिटीज के मरीजों को होता है।

पाचन शक्ति बढ़ाती है

यह बेल पाचन तंत्र के सारे कामों को भली-भांति संचालित करती है और भोजन के पचने की प्रक्रिया में मदद करती है। इससे व्यक्ति कब्ज और पेट की दूसरी गड़बड़ियों से बचा रहता है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में तनाव या स्ट्रेस एक बड़ी समस्या बन चुका है। गिलोय मानसिक तनाव और चिंता (एंजायटी) के स्तर को कम करती है। इसकी मदद से न केवल याददाश्त बेहतर होती है बल्कि मस्तिष्क की कार्यप्रणाली भी दुरुस्त रहती है और एकाग्रता बढ़ती है।

बढ़ाती है आंखों की रोशनी

गिलोय को पलकों के ऊपर लगाने पर आंखों की रोशनी बढ़ती है। इसके लिए आपको गिलोय पाउडर को पानी में गर्म करना होगा। जब पानी अच्छी तरह से ठंडा हो जाए तो इसे पलकों के ऊपर लगाएं।

अस्थमा में भी फायदेमंद

मौसम के परिवर्तन पर खासकर सर्दियों में अस्थमा को मरीजों को





काफी परेशानी होती है। ऐसे में अस्थमा के मरीजों को नियमित रूप से गिलोय की मोटी डंडी चबानी चाहिए या उसका जूस पीना चाहिए। इससे उन्हें काफी आराम मिलेगा।

गठिया में मिलेगा आराम

गठिया यानी आर्थराइटिस में न केवल जोड़ों में दर्द होता है, बल्कि चलने-फिरने में भी परेशानी होती है। गिलोय में एंटी आर्थराइटिक गुण होते हैं, जिसकी वजह से यह जोड़ों के दर्द सहित इसके कई लक्षणों में फायदा पहुंचाती है।

अगर हो गया हो एनीमिया, तो करिए गिलोय का सेवन

भारतीय महिलाएं अक्सर एनीमिया यानी खून की कमी से पीड़ित रहती हैं। इससे उन्हें हर वक्त थकान और कमजोरी महसूस होती है। गिलोय के सेवन से शरीर में लाल रक्त कणिकाओं की संख्या बढ़ जाती है और एनीमिया से छुटकारा मिलता है। गिलोय को पानी में पीस कर उबाल लें। ठंडा करके छान के कुछ बूंदें कान में डालें। एक-दो दिन में सारा मैल अपने आप बाहर जाएगा।

कम होगी पेट की चर्बी

गिलोय शरीर के उपापचय (मेटाबॉलिज्म) को ठीक करती है, सूजन कम करती है और पाचन शक्ति बढ़ाती है। ऐसा होने से पेट के आस-पास चर्बी जमा नहीं हो पाती और आपका वजन कम होता है।

खूबसूरती बढ़ाती है गिलोय

गिलोय न केवल सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है, बल्कि यह त्वचा और

बालों पर भी चमत्कारी रूप से असर करती है-

जवां रखती है गिलोय

गिलोय में एंटी एजिंग गुण होते हैं, जिसकी मदद से चेहरे से काले धब्बे, मुंहासे, बारीक लकीरें और झुर्रियां दूर की जा सकती हैं। इसके सेवन से आप ऐसी निखरी और दमकती त्वचा पा सकते हैं, जिसकी कामना हर किसी को होती है। अगर आप इसे त्वचा पर लगाते हैं तो घाव बहुत जल्दी भरते हैं। त्वचा पर लगाने के लिए गिलोय की पत्तियों को पीस कर पेस्ट बनाएं। अब एक बरतन में थोड़ा सा नीम या अरंडी का तेल उबालें। गर्म तेल में पत्तियों का पेस्ट मिलाएं। ठंडा करके घाव पर लगाएं। इस पेस्ट को लगाने से त्वचा में कसावट भी आती है।

बालों की समस्या भी होगी दूर

अगर आप बालों में ड्रेंडफ, बाल झड़ने या सिर की त्वचा की अन्य समस्याओं से जूझ रहे हैं तो गिलोय के सेवन से आपकी ये समस्याएं भी दूर हो जाएंगी।

गिलोय का प्रयोग ऐसे करे- अब आपने गिलोय के फायदे जान लिए हैं, तो यह भी जानिए कि गिलोय को इस्तेमाल कैसे करना है-

गिलोय जूस - गिलोय की डंडियों को छील लें और इसमें पानी मिलाकर मिक्सी में अच्छी तरह पीस लें। छान कर सुबह-सुबह खाली पेट पिएं। गिलोय का जूस भी बाजार में उपलब्ध है। चार इंच लंबी गिलोय की डंडी को छोटा-छोटा काट लें। इन्हें कूट कर एक कप पानी में उबाल लें। पानी आधा होने

पर इसे छान कर पिएं। अधिक फायदे के लिए आप इसमें लौंग, अदरक, तुलसी भी डाल सकते हैं।

पाउडर - गिलोय पाउडर घर पर भी बना सकते हैं। इसके लिए गिलोय की डंडियों को धूप में अच्छी तरह से सुखा लें। सूख जाने पर मिक्सी में पीस कर पाउडर बनाकर रख लें। आपके घर पर या आस-पास ताजा गिलोय उपलब्ध नहीं है तो आप पावडर का सेवन कर सकते हैं। अरंडी यानी कैस्टर के तेल के साथ गिलोय मिलाकर लगाने से गाउट (जोड़ों का गठिया) की समस्या में आराम मिलता है। इसे अदरक के साथ मिला कर लेने से रुमेटाइड आर्थराइटिस की समस्या से लड़ा जा सकता है। चीनी के साथ इसे लेने से त्वचा और लिवर संबंधी बीमारियां दूर होती हैं। आर्थराइटिस से आराम के लिए इसे घी के साथ इस्तेमाल करें। कब्ज होने पर गिलोय में गुड़ मिलाकर खाएं।

गिलोय को नियमित रूप से इस्तेमाल करने के कोई गंभीर दुष्परिणाम अभी तक सामने नहीं आए हैं, लेकिन चूंकि यह खून में शर्करा की मात्रा कम करती है। इसलिए इस बात का ध्यान रखें कि ब्लड शुगर जरूरत से ज्यादा कम न हो जाए। गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को और पांच साल से छोटे बच्चों को गिलोय का सेवन नहीं कराना चाहिए। अभी वर्षा ऋतु है अपने घर में बड़े गमले या आंगन में जहां भी उचित स्थान हो गिलोय की बेल अवश्य लगायें यह बहु उपयोगी वनस्पति आयुर्वेद का अमृत और ईश्वरीय अवदान है।



श्रीमती पुष्पा चौहान

वर्तमान में आवागमन के साधनों की वृद्धि के कारण जगह-जगह पेट्रोल एवं डीजल भराने हेतु सरकार एवं निजी कंपनियों द्वारा पेट्रोल पंप लगाए जा रहे हैं। जिसके कारण व्यवसायियों की इस क्षेत्र में धनार्जन करने की होड़ लगी है। इस क्षेत्र के व्यवसाय के लिए कुंडली के ग्रहों का अध्ययन कर निम्न निष्कर्ष निकाले गए हैं जो निम्नानुसार देखे जा सकते हैं:-

1. इस व्यवसाय के संदर्भ में अग्नि कारक मंगल, वायु कारक राहु, जलीय ग्रह शुक्र एवं चंद्र तथा व्यापार कारक बुध की कुंडली में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
2. यदि अग्नि कारक मंगल भाग्येश या कर्मेश या आयेश या लग्नेश होकर जलीय ग्रहों की राशि मीन, कर्क, वृश्चिक में हो और व्यापार कारक बुध भी जलीय ग्रहों की राशि या वायु तत्व राशियों में बलवान हो रहा हो तो जातक की



पेट्रोल पंप के व्यवसाय में रुचि लेने की पूर्ण संभावना होती है।

3. यदि मंगल या बुध करमेश या लाभेश होकर धनभाव और पराक्रम भाव से संबंध करें साथ ही राहु जैसा ग्रह यदि लाभेश या धनेश या कर्मेश से संबंध बनाता हो, तब भी जातक पेट्रोल पंप जैसे व्यवसाय को करता है।
4. पेट्रोल एवं डीजल के कारक मंगल एवं शनि यदि कुंडली में वाहन

कारक राशि तुला से संबंध करें, तो भी जातक इस व्यवसाय से जुड़ता है।

5. कुंडली में जलीय भाव चौथे, आठवें एवं बारहवें घर का संबंध कारक बुध, शनि, मंगल राहु से हो तो भी जातक इस व्यवसाय में कार्य करता है।

और भी कई योग बनते हैं परंतु उन्हें न दिया जाकर उनसे जुड़े कुछ व्यवसायियों की कुंडलियों का विवेचन आगे दिया जा रहा है। जिन्हें देखें-

जन्म कुण्डली 8 सितंबर 1950 5:56:02

के बु (व)	6	शु ल	पं
शु 1		सू श	4
	के	8 5 2	3
		11	
9		गु (व)	1
	2		
	10		12 व

कुण्डली नं.1
नवांश जीवन साथी

गु (व) 9	8	ल	6	5 श
श		सू		
	11	7	4	च
		10	1	
के	11			3
		2		
	12 बु (व)			2 शु मं

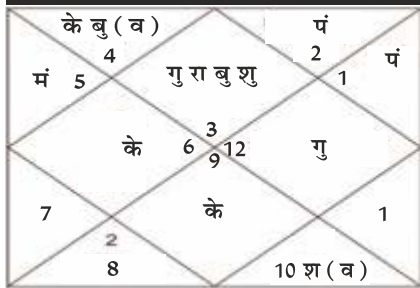
उक्त कुंडली 1 एक सफल पेट्रोल पंप व्यवसायी की है। कुंडली में वाहन कारक शुक्र लग्न में, जलीय ग्रह चंद्र स्वराशि में तथा व्यापार कारक बुध स्वराशि का होकर लग्न के दोनों और द्वितीय द्वादश भाव में बैठे हैं। द्वितीय कारक राहु जलीय भाव जलीय राशि





मीन में होकर धन भाव में बैठे लाभेश व धनेश बुध को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। साथ ही भूमि कारक मंगल भी वाहन कारक शुक्र की राशि तुला में बैठकर कर्म भाव में शुक्र की दूसरी राशि वृषभ पर अपनी पूर्ण दृष्टि दे रहा है, जो पेट्रोल पंप व्यवसाय बनाकर धर्नाजन कराता है।

जन्म कुण्डली 15 जुलाई 1963 5:19:30



उक्त कुंडली 2 भी एक पेट्रोल पंप व्यवसायी की है। लग्न में व्यापार कारक बुध वाहन कारक शुक्र व राहु से युति कर है, स्वराशि का कर्मेश कर्म भाव में बली है। लाभेश मंगल पराक्रम में बैठकर जलीय राशि वृश्चिक व मीन पर दृष्टि दे रहा है। द्वितीय कारक शनि स्वराशि के होकर अष्टम में बलि है, इसकी कर्म भाव, धन भाव व पंचम भाव पर दृष्टि पेट्रोल पंप व्यवसाय से जोड़ती है।

उक्त कुंडली 3 पेट्रोल पंप व्यवसायी की कुंडली में दोनों पेट्रोल के कारक

जन्म कुण्डली 8 सितंबर 1953 8:40:00



धनेश शुक्र लाभेश चंद्र हैं, साथ ही यह दोनों ग्रह धनेश बुध व पराक्रमेश मंगल के साथ एशोआराम के भाव 12 में युति कर रहे हैं। कर्म भाव का गुरु उच्च के शनि पर पंचम दृष्टि देकर कर्म से धनवान बना रहा है। राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी शनि उच्च का धन भाव और धनेश शुक्र आय भाव में है, जो

कुण्डली नं. 2
नवांश जीवन साथी



निश्चित ही पेट्रोल/डीजल जैसे व्यवसाय से आय होना दर्शाता है।

उक्त कुंडली 4 भी एक प्रतिष्ठित

जन्म कुण्डली 28 नवंबर 1961 6:20:00



पेट्रोल पंप व्यवसायी की है। इस कुंडली के विवेचन करने से ज्ञात होता है कि

कुण्डली नं. 3
नवांश जीवन साथी



व्यवसाय कारक दशमेश सूर्य लग्न में मित्र राशि का होकर कारक राहु से दष्ट है। लाभेश बुध व लग्नेश मंगल भी इसी दशमेश सूर्य के साथ लग्न में युति कर अति बली होकर बैठे हैं। इसी युति को कारक राहु अपनी दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। भाग्येश चंद्र पेट्रोल कारक राहु के साथ भाग्य भाव में ही होकर पराक्रमेश शनि व धनेश गुरु की युति से परस्पर दष्ट करने से इस व्यवसाय की ओर रुझान देता है। शुक्र ऐशो आराम वह वाहन का कारक होकर वाहन की ही राशि तुला में अपने प्रिय घर 12वें भाव में वाहन से संबंधित कार्य करने की ओर प्रेरित कर रहा है। नवांश में देखें कि कर्मेश सूर्य वाहन कारक शुक्र की तुला नवांश में हो कर धनेश गुरु से परस्पर दृष्टि संबंध कर रहा है और स्व नवांश के शनि से यही

कुण्डली नं. 4
नवांश जीवन साथी



कर्मेश सूर्य दष्ट होकर प्रभावित हो रहा है। बुध नवांश का शुक्र व व्यापार कारक लाभेश बुध दोनों ही कारक लग्नेश मंगल से दष्ट होकर प्रभावित है। व्यापार कारक बुध पुनः नवांश में राहु की दृष्टि से प्रभावित हो रहा है। इन्हीं कारणों से ही जातक उच्च स्तर का पेट्रोल पंप व्यवसायी होकर धन व यश पा रहा है।



**श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस**

सुखमय दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष



पतिव्रता योग- दांपत्य सुख में यह योग बड़ा दुर्लभ योग माना जाता है। पति के अनुकूल आचार व व्यवहार करने वाली स्त्री पतिव्रता कहलाती हैं। इस योग का विचार पुरुष एवं स्त्री दोनों की कुंडली से किया जाता है। पतिव्रता व शालीन स्वभाव की स्त्री चाणक्य के अनुसार घर को स्वर्ग बना देती है। यहां निम्नलिखित कुछ योग बताए जा रहे हैं जिनको देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कौन सी स्त्री पतिव्रता होगी। पाठकगण निम्न योगों के अतिरिक्त अन्य शुभ योगों को भी फलित करते वक्त ध्यान में रखें तो सटीक फलित संभव होगा-

1. जिसकी कुंडली में सप्तम स्थान में शुक्र के नवांश में मंगल हो तथा उसे शुभ ग्रह देखते हों तो इस योग में उत्पन्न स्त्री पति की सेवा में तत्पर रहती है।

2. जिसकी कुंडली में सप्तम स्थान में गुरु एवं शुक्र दोनों हों तथा चतुर्थ भाव में शुक्र हो वह स्त्री पतिव्रता होती है।

3. लग्नेश एवं शुक्र साथ-साथ हों तथा इन पर गुरु की दृष्टि हो तो इस योग में उत्पन्न स्त्री अपने पति की आज्ञाकारी होती है।

4. सप्तमेश बलवान होकर गुरु के साथ हो तथा चतुर्थेश दो शुभ ग्रहों के बीच में हो तो इस योग में उत्पन्न में स्त्री धार्मिक स्वभाव वाली होती है।

5. सप्तमेश गुरु के साथ हो तथा सप्तम स्थान में गुरु हो और इस पर बुध या शुक्र की दृष्टि हो तो इस योग में उत्पन्न होने वाली स्त्री पति परायण होती हैं।

निम्न स्थितियों में जातक को दांपत्य जीवन से संबंधित परेशानियों एवं संकट का सामना करना पड़ता है-

आज के समय में पारिवारिक तनाव जिसमें पति-पत्नी के वैचारिक मतभेद बहुत बढ़ते जा रहे हैं। इसके दृष्टिगत रखते हुए हमारे विद्वान लेखक श्री एस.एस. लाल ने अपने अन्वेषणात्मक लेख से सुखमय दाम्पत्य जीवन के ग्रह योग स्पष्ट किए हैं। पाठकों की जानकारी के लिए अक्षरशः यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं:- **सम्पादक**

1. भाव 7, सप्तमेश एवं कारक ग्रह अशुभ एवं अकारक ग्रहों के प्रभाव में हो तथा पाप ग्रहों के मध्य में हो।

2. सप्तमेश एवं भाव 7 का कारक नीचस्थ, सूर्य से अस्त या राशि संधि में हो।

3. भाव 7 एवं भाव 7 का कारक 6, 8 या 12 वे भाव में अशुभ स्थिति में हो।

4. अष्टक वर्ग में सप्तमेश एवं 7 भाव कारक को न्यून शुभ बिंदु (1,2,या 3) प्राप्त हो।

5. सप्तमेश एवं सप्तम भाव कारक विपत नक्षत्र (3) प्रत्यरी नक्षत्र (5) एवं वध नक्षत्र (7) में स्थित हो।

6. सप्तमेश एवं सप्तम भाव कारक नीचाभिलाषी हो। अन्य वर्गों (नवमांश, द्रष्टकोण, सप्तमांश, त्रिशांश आदि) में

निर्मल अवस्था में हो। अन्य योगों में ग्रहों एवं भाव के पीड़ित होने के कारण वे निर्बल हो जाते हैं तथा दांपत्य जीवन संबंधी अशुभ फलों की प्राप्ति का संकेत करते हैं।

अविवाहित रहने का प्रमुख कारण एवं ग्रह योग

सन्यास, निर्धनता एवं बेरोजगारी, उच्चाभिलासिता, तारीख की प्रति पूर्ण समर्पण, प्रेम प्रसंगों में विफलता इत्यादि हैं। उक्त प्रत्यक्ष कारणों के मूल में ज्योतिषीय कारण होते हैं, जो जातक को अविवाहित बनाते हैं। जातक को अविवाहित रखने के प्रमुख ज्योतिषीय कारण निम्नानुसार हैं-

1. पंचमेश नीच राशिगत, शत्रुक्षेत्री, अस्त या 6,8 विकास 12 भाव में स्थित हो, अविवाहित रहने का योग होता है।

2. यदि क्रूर ग्रह पंचम, अष्टम और द्वादश भावों में स्थित हो तथा विवाह कारक अन्य योगों के न होने पर जातक अविवाहित जीवन व्यतीत करता है।

अविवाहित किस दिशा में सोए, जिससे शीघ्र विवाह हो

अविवाहित युवक हो या युवती जिसका विवाह नहीं हो रहा है और अनेक बाधाएं आ रही हैं, उन्हें घर के वायव्य कोण अर्थात् उत्तर पश्चिम दिशा वाले कौन में सोना चाहिए इससे शीघ्र विवाह योग बनेंगे। यदि किसी परिवार में अलग





से कमरा ना हो तो वह वायव्य कोण वाली जगह में सोए और लाभ पाएं। कुंवारे लड़के या लड़कियों के शयनकक्ष में हरे पौधे या फूलों का गुलदस्ता नहीं रखें। शयन कक्ष में हरे व लाल रंग के पुष्प कदापि न हो क्योंकि यह शुभ नहीं माने जाते। सफेद रंग के पर्दे यह सोने के बिस्तर सफेद रंग की चादर शुभ रहेगी। टीवी, टेलीफोन या कंप्यूटर भी शयनकक्ष में ना रखें, नहीं किताबों को रखें, क्योंकि इनके होने से सोने में बाधा रहेगी और नींद नहीं आएगी। अविवाहित युवक या युवती को कभी भी दरवाजे के सामने सिर या पांव नहीं रखना चाहिए। नैऋत्य कोण में क्रिस्टल का झाड़ु रखे तो उत्तम रहेगा। नैऋत्य कोण वाले कमरे में प्रेमी युगल के चित्र लगाएं, मोर-मोरनी या लव बर्ड के चित्र भी लगा सकते हैं। शयन कक्ष में हल्के गुलाबी पर्दे लगा सकते हैं। इस प्रकार यदि अविवाहितों के लिए उपाय किए जाए तो विवाह से बाधा दूर होगी एवं उत्तम रिश्ते आने की संभावना अधिक बढ़ जाएगी।

तलाक क्यों? इस क्यों के अनेक कारण हैं। प्रथम कारण- आपसी मतभेद, वाद विवाद। दूसरा कारण- आर्थिक तंगी। तीसरा कारण- यौन दुर्बलता और संदिग्ध चरित्र माना जा सकता है। कभी-कभी संतान का ना होना भी तलाक का कारण हो सकता है। इन्हीं सब बातों को लेकर ग्रहों से संबंधित योग दिए जा रहे हैं जो तलाक का कारण बनते हैं। इसका प्रमुख कारण लग्न, सप्तम व सप्तमेश, भाव 11 एवं एकादशेश से जाना जा सकता है। स्वयं का चरित्र लग्न से जाना जा सकता है, वही आय भाव 11 से जाना जा सकता है एवं सप्तमेश से दांपत्य जीवन, जो दांपत्य जीवन का कारक भाव है। ग्रहों में शुक्र की अहम भूमिका होती है। क्योंकि यही ग्रह आय से संबंध भी रखता है, जो दांपत्य जीवन का कारक भी होता है और शुक्र की स्थिति से ही जाना जा सकता है कि तलाक होगा या नहीं। इस ग्रह पर किन-किन अशुभ ग्रहों



का प्रभाव है वह यदि कोई अशुभ ग्रह का प्रभाव है और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा जातक सत्वरित्र होता है। शुभ ग्रहों में गुरु अत्यंत प्रभावी माना गया है।

1. जन्म लग्न कोई भी हो, परंतु यदि दांपत्य कारक शुक्र, सिंह राशि का बैठ जाए तो तलाक का कारण प्रबल रूप से बनता है, क्योंकि शुक्र अग्नि तत्व प्रधान राशि में होगा। यदि इस पर गुरु की दृष्टि पड़ेगी तो दांपत्य जीवन तनावपूर्ण रहेगा, लेकिन तलाक की नौबत नहीं आएगी।

2. किसी भी लग्न में शुक्र यदि मिथुन राशि में हो एवं उसके साथ केतु, या मंगल की युति हो, तो जातक संदिग्ध चरित्र वाला होकर तलाक का कारण बनेगा।

3. मंगल, तुला या वृषभ राशि में हो और शुक्र मेष या वृश्चिक राशि में हो, तो चरित्र संदिग्ध होगा एवं दांपत्य जीवन तनावपूर्ण रहेगा।

4. जन्म लग्न में शुक्र, मंगल तथा चंद्र हो, तो उस जातक का चरित्र संदिग्ध होगा।

5. शुक्र राहु से पीड़ित होकर कहीं भी बैठे हूँ तो उस जातक का तलाक संभव है।

6. शुक्र केतु मंगल की युति भी तलाक का कारण बनाती है।

7. धनु लग्न में राहु, मंगल शुक्र हो

तो ऐसे जातक को दांपत्य सुख नहीं मिलता है। ऐसा जातक भोगी अवश्य होता है।

8. जिस जातक की पत्रिका में शुक्र नीच राशि का हो और उस पर शनि या राहु की दृष्टि पड़ती हो तब भी दांपत्य जीवन बाधित रहता है।

9. नवांश कुंडली में यदि शुक्र, शनि की राशि में हो और शनि, शुक्र की राशि में हो तब भी दांपत्य जीवन कष्टप्रद रहता है।

निम्न ज्योतिषीय योगों से जातक का दाम्पत्य जीवन सुखमय होता है-

1. भाव 7 सप्तमेश एवं ग्रहों से युति या दृष्टि संबंध बनाते हो।

2. सप्तमेश एवं सप्तम भाव कारक यदि स्वराशि, मूल त्रिकोण राशि या उच्च राशि, वर्गोत्तम में हो।

3. भाव 7 शुभ कर्तरी योग में हो अर्थात् 6 एवं 8 भाव में शुभ ग्रह स्थित हो। इसी प्रकार सप्तमेश एवं सप्तम भाव का कारक शुभ ग्रहों के मध्य स्थित हो।

4. सप्तमेश एवं 7 भाव कारक केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभ स्थिति में हो।

5. भाव 7 एवं सप्तमेश के साथ 7 भाव कारक का शुभ संबंध हो।

6. अष्टक वर्ग में सप्तमेश एवं 7 भाव कारक अधिक शुभ बिंदु (6,7 या 8 रेखाएं) प्राप्त करते हो।



सुखी परिवार की कल्पना

सानन्द सदनम्

हमारे समाज की सबसे छोटी ईकाई परिवार है, सुखी समाज के लिए सानन्द परिवार होना आवश्यक है सानन्द का अर्थ है, सुख पूर्वक आनन्द के साथ परिवार के सदस्यों का रहना ही 'सानन्द सदनम्' को परिभाषित करता है।

सुव्यवस्थित परिवार का संचालन के लिए परिवार के सदस्यों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसके लिए परिवार के सभी सदस्य की अपनी जिम्मेदारी होती है कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निम्न अनुसार हैं:-

जिम्मेदारी का बंटवारा

- पारिवारिक कार्यों की जिम्मेदारी परिवार के सभी सदस्यों की होनी चाहिए। प्रत्येक सदस्य को परिवार के कार्यों की आवश्यकता का एहसास होना चाहिए जैसे कि मकान का रखरखाव।
- मकान की आवश्यक यथा समय मरम्मत करना, रंगाई-पुताई स्वच्छता का कार्य।



सुरेन्द्र गार्डन सोसायटी के मंदिर समिति के सदस्यों द्वारा सायं काल पर परस्पर चर्चा के दौरान विषय पर आधारित कुछ विदुतम किए जिन पर आलेख बनाकर प्रस्तुत किया गया है, चर्चा में मुख्यतः श्री के.बी. उपाध्याय, श्री के.के. गोस्वामी, श्री जे.पी. शर्मा आदि उपस्थित थे। - संपादक



- मकान में बिजली पानी की व्यवस्था का प्रबन्धन।
- परिवार के सदस्यों के लिए भरण-पोषण की सामग्री की व्यवस्था।
- परिवार के इर्द-गिर्द पड़ोसियों तथा संबंधियों के साथ मधुरता पूर्ण तथा आवश्यकता अनुसार व्यवहार की जिम्मेदारी।

उपरोक्त पांच बिंदु को दृष्टिगत रखते हुए पारिवारिक भूमिका

- सदस्य जिसमें संतान तथा भाइयों बहनों को साथ कार्य का बंटवारा करते हुए रखना चाहिए ताकि

समय पर सभी आवश्यक कार्य संचालित हो सके।

- परिवार में सामाजिक/आर्थिक प्रगति के बारे में परस्पर प्रयास। परिवार के सदस्यों में अपनी निजी प्रगति के साथ ही सामाजिक और आर्थिक स्थिति की प्रगति का प्रयास परस्पर करना चाहिए। जिसके लिए निम्नांकित बिंदुओं पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

- परिवार की आर्थिक पक्ष की मजबूती का प्रयास संयुक्त परिवार के सदस्यों को परस्पर बचत की भावना रखना चाहिए तथा बचत से प्राप्त लाभ से कोई आकरिमक नीधि की स्थापना करना चाहिए, जिससे यथा समय होने वाले आकरिमक व्यय की व्यवस्था की जा सके। इसमें पत्नी और माता की विशेष सहभागिता रखनी चाहिए।

- मांगलिक/धार्मिक कार्यक्रमों के निर्वहन में सभी की भागीदारी परिवार में मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों का संचालन





निर्धारित किया जाकर सभी सदस्यों की भागीदारी हो जिससे कि प्रत्येक सदस्य परिवार में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सके तथा अपनत्व की भावना प्राप्त हो सके।

स. प्रत्येक परिवार समाज का एक अभिन्न अंग है अत एव सामाजिक कार्यक्रमों के दौरान परिवार के सभी सदस्य की सहभागिता आवश्यक होना चाहिए।

प्रत्येक सदस्य की परस्पर सहभागिता

- परस्पर विचारों का आदान-प्रदान:- परिवार के प्रत्येक सदस्यों की परस्पर विचारों का आदान-प्रदान चर्चा के माध्यम से होते रहना चाहिए ताकि अपने सौंपे गए कार्यों की अद्यतन स्थिति ज्ञात रह सके।
- किसी सदस्य की सहभागिता यदि नहीं है तो उसका कारण का पता लगाते हुए उसे सहभागी बनाया जाना चाहिए।
- परिवार में किसी सदस्य का उसके पीठ पीछे अनादर नहीं हो, यदि कोई त्रुटी या कमी है तो उसे प्रत्यक्ष में बुलाकर स्पष्ट की जानी चाहिए।
- किसी भी मांगलिक/धार्मिक/सामाजिक कार्यक्रम के दौरान

प्रत्येक सदस्य की सहभागिता होनी चाहिए, उसे यह प्रतीत नहीं हो कि अनावश्यक रूप से उसे कार्य से पृथक किया गया हो।

सद्विचार वालों का परिवार में आगमन हो

- जीवन में धनात्मक ऊर्जा सद्विचारों से प्राप्त होती है अतएव सद्विचार रखने वाले सज्जन पुरुषों का परिवार में सतत् आगमन होना चाहिए।
- वर्षभर में निर्धारित परम्परावादी पर्व और त्यौहारों का प्रसन्नता पूर्वक सदस्यों के साथ मनाया जाना चाहिए। यदि इस अवसर पर कोई सज्जन पुरुष अथवा संत व्यक्तित्व वाले उपस्थित होते हैं तो उनकी सहभागिता रखनी चाहिए।
- समय-समय पर आध्यात्मिक, नैतिक, सद्विचारित संबंधित धार्मिक ग्रंथों का पाठ परिवार में होते रहना चाहिए।

परिवार में ईश्वर चिंतन/भजन/प्रार्थना आवश्यक

- परिवार की प्रसन्नता के लिए परिवार में ईश्वर आराधना के लिए घर के इशान्य कोण में पूजन स्थान नियत

होना चाहिए जिसमें कि प्रत्येक सदस्य नियमित रूप से ईश्वर की आराधना कर सके और जीवन पथ में आने वाली कठिन यात्रा के मार्ग को आत्मबल और स्वविवेक से आसानी से हल कर सके।

- प्रतिदिन ईश्वर आराधना के साथ ही आंगन में तुलसी का पौधा और मन को प्रसन्नचित रखने वाले एवं महक फैलाने वाले सुगंधित पौधों को क्यारी में लगाना चाहिए।
- अपने इष्ट बल को बढ़ाने के लिए नियमित भजन-पूजन तथा पर्व, व्रत, त्यौहार के दिन परिवार के साथ प्रार्थना करना चाहिए, अपने निर्धारित स्तोत्र का पाठ करते हुए आरती में साथ में उपस्थित रहना चाहिए।

सानन्द सदनम् के लिए उपरोक्त पांच बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अपने परिवार की दिनचर्या रखनी चाहिए जिससे कि परिवार सुख समृद्धि की ओर अग्रसर हो सके, संस्कृत के विद्वानों द्वारा इसे निम्न श्लोक से प्रतिपादित किया है-

सानन्द सदनम्प
सुतास्तु सुधीयः
कान्ताच प्रियालापिनी
इच्छा पूर्तिं धन स्वयंसितीरति
स्वाज्ञापरा सेवकः
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनम्
मिष्टान्नपानं गृहे
साधोः संगमुपासते च सततं
धन्यो गृहस्थाश्रमम् ॥

- एक अच्छे गृहस्थाश्रम को उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट किया है जिसमें कि बुद्धिमान पुत्र, आज्ञाकारी सेवक, प्रियभाषिणी पत्नी, इच्छापूर्ति, धन व्यय करने की सामर्थ्यता, घर में ईश्वर की पूजन तथा स्वादु भोजन के बनने के साथ ही सज्जन पुरुषों का घर में सतत आगमन होना एक अच्छे गृहस्थाश्रम को बताया गया है, तो आए हम और जीवन वैभव परिवार एक अच्छे गृहस्थाश्रम का सुख सानन्द सदनम् में रहकर प्राप्त कर सकें।



डॉ. बी.एल. शर्मा
से.नि.सहायक पोस्ट मास्टर जनरल

ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में रत्न शब्द आया है। रत्नों का इतिहास हमारे भारत देश में अति प्राचीन है। ऋग्वेद के मंत्र में रत्न शब्द का उल्लेख इस प्रकार है-

“ओऽम अग्नि मीडे पुरोहित यज्ञस्य देवम ऋत्विजं होतारं रत्नधातमम्”

अतः सबसे प्राचीन उपयुक्त वेद में भी रत्न का उल्लेख यह सिद्ध करता है कि भारत वर्षों में रत्नों का प्रयोग आदिकाल से हो रहा है किस व्यक्ति को कौन सा रत्न लाभकारी होगा, इसके संबंध में विभिन्न धारणाएं प्रचलित हैं। एक मत है कि जो ग्रह लग्नेश हो, उसका रत्न धारण करना चाहिए, क्योंकि लग्न भाव आयु स्वास्थ्य और धन का प्रतिनिधि है और यश की प्राप्ति का घटक है एक अन्य मत के अनुसार लग्नेश का रत्न लाभकारी सिद्ध हुआ है।

महर्षि वराह मिहिर ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ बृहत्संहिता के खंड 2 के अध्याय 79 से 82 में रत्नों के संबंध में विस्तृत व्याख्या की है इसी प्रकार अग्नि पुराण, शुकनीतिसार, नारद संहिता आदि ग्रंथों में भी रत्नों की व्याख्याएं की गई हैं।

अनेक विद्वान त्रिकोणेश का रत्न धारण करने का मत प्रकट करते हैं। इसके अनुसार मेष लग्न वाले को

रत्न धारण करो - भाग्य बदलो



पीला पुखराज पहनने से उसे राज्य कृपा मिलेगी, पदोन्नति आदि होगी, पिता की आय बढ़ेगी।

इस प्रकार वृष लग्न वाला व्यक्ति यदि पन्ना धारण करता है, तो उसके बुध को बल मिल कर वह विद्या, धन, सूझबूझ, मंत्रणा शक्ति तथा भाग्य वृद्धि करेगा। इसी प्रकार अन्य लग्न वालों के लिए भी अन्य रत्न लाभकारी सिद्ध होते हैं। यहां लग्नेश और त्रिकोणेश के रत्न का विवरण दिया गया है:-

व्यक्तित्व के निखार के लिए लग्नेश एवं त्रिकोणेश दोनों के रत्न धारण करने चाहिए। इनसे भाग्योदय भी त्वरित गति से होगा। कुछ विद्वानों का मत है कि नीच राशि स्थित ग्रह यदि लग्नेश या त्रिकोणेश भी हो, तब भी उसका रत्न नहीं धारण करना चाहिए। परंतु यह सिद्ध पाया गया कि यदि उक्त ग्रह नीच का हो तो उसका रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। अप्रैल 2000 में एक व्यक्ति, जिनकी जन्म तारीख 13-

11-1973 है, ने बताया कि उन्हें चार्टर्ड अकाउंटेंट परीक्षा में सफलता नहीं मिल रही है। उसका वृश्चिक लग्न है और गुरु मकर में नीच राशि में है उसे पीला पुखराज और मानिक पहनाए गए और वह नवंबर 2000 की अंतिम परीक्षा में पास हो कर चार्टर्ड अकाउंटेंट बन गया।

इसी प्रकार जिस वृश्चिक राशि एवं लग्न वाले व्यक्ति का भाग्येश चंद्र नीच राशि में रहता है, उसे मोती बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है एवं तुला राशि वाले को शनि मेष में नीच राशि का होने से नीलम बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है। उपयुक्त दोनों प्रकरणों में चंद्र एवं शनि योग कारी होने से बहुत लाभकारी होना चाहिए, परंतु नीच राशि स्थित होने से बहुत अशक्त है। सो, उनका रत्न पहनना बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुआ है।

महर्षि वराह मिहिर ने पंच महापुरुष राजयोगों की व्याख्या अपने ग्रंथ बृहत्संहिता में इस प्रकार की है पांच





जीवन वैभव

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक परीक्षा



तारा ग्रह (गुरु, मंगल, बुध, शुक्र या शनि) में से एक-एक ग्रह को बलवान रहने पंच महापुरुष राज योग बनते हैं। ये स्थान, दिख काल, चेष्टा आदि बलों से युक्त हो, स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री उक्त ग्रह केंद्र भावों में स्थित हो, तो गुरु से हंस, शनि से शश, मंगल से रुचक, बुध से भद्र तथा शुक्र से मालव्य पंच महापुरुष राजयोग की सृष्टि होती है। ऐसे योग वाले को क्रमशः हंस में पुखराज, ससा में नीलम, रुचक में मूंगा, भद्र में पन्ना और मालव्य में हीरा, बहुत लाभकारी सिद्ध होते हैं। इस कारण व्यक्ति इस प्रकार के रत्न धारण करके लाभान्वित हो सकते हैं।

विभिन्न बीमारियों में भी रत्न बहुत लाभकारी होते हैं: यह वर्ण चिकित्सा ही है, जिसमें रत्न लाभकारी सिद्ध हुए हैं-हृदय रोग में माणिक (रुबी) लाभकारी है इससे रक्त का संचालन की गति से होता है तथा ऑक्सीजन भी, हीरे के साथ रक्त को ठीक मात्रा

	लग्न	लग्नेश	लग्नेश का रत्न	त्रिकोणेश का रत्न
1	मेघ	मंगल	मूंगा	पुखराज
2	वृष	शुक्र	हीरा	पन्ना एवं नीलम
3	मिथुन	बुध	पन्ना	हीरा
4	कर्क	चंद्र	मोती	मूंगा
5	सिंह	सूर्य	माणिक	मूंगा
6	कन्या	शुक्र	पन्ना	हीरा
7	तुला	शुक्र	हीरा	नीलम
8	वृश्चिक	मंगल	मूंगा	पुखराज
9	धनु	गुरु	पुखराज	माणिक
10	मकर	शनि	नीलम	हीरा
11	कुंभ	शनि	नीलम	हीरा
12	मीन	गुरु	पुखराज	मोती

में मिलती है। यदि शरीर का दुबलापन, ज्वर तथा हृदय की धड़कन को नियंत्रित करता है।

लाल मूंगा गर्भवती महिला का गर्भपात से बचाता है और पुरुष को जीवन शक्ति प्रदान करता है। यह ज्वर और पीलिया में भी लाभकारी है।

गर्भवती महिला के लिए हरा पन्ना सुरक्षित प्रसव में सहायक है। यह दमे के रोग को भी कम करता है। हमारे महर्षि ने अपनी खोज से यह निष्कर्ष निकाला है कि जिस वस्तु का रंग जितना गहरा होगा, वह उतना ही अधिक अपने गुण की अभिव्यक्ति करेगा। इसी सिद्धांत पर रत्नों का मूल्य है रत्नों में रंग का घनत्व अधिक होने से वे अधिक लाभकारी सिद्ध हुए हैं और होते भी है। इसी सिद्धांत के अनुसार हमें लाभकारी रत्न धारण करना चाहिए।

विभिन्न रत्नों को धारण करने के लिए उन ग्रहों के दिन, यानी मोती के लिए सोमवार, माणिक के लिए रविवार, मूंगे के लिए मंगलवार, पन्ना के लिए बुधवार, पुखराज के लिए गुरुवार, हीरे के लिए शुक्रवार और नीलम के लिए शनिवार उपयुक्त रहते हैं। यह भी अवश्य देख ले कि शुक्ल पक्ष हो और उक्त दिन 4,9,14 तिथियां न हो। इन तिथियों में रत्न धारण जैसे शुभ कार्य वर्जित है।





राजा दुबे

गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड में एक प्रसंग में गोस्वामीजी ने लिखा है कि -

**धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी,
आपातकाल परखिये चारु**

इन पंक्तियों में आपातस्थिति में जिन चार चीजों को परखने की बात कही गई है उनमें सबसे पहले जिक्र है 'धीरज' का जो एक मनोवृत्ति है, उसके बाद जिक्र है 'धर्म' का जो एक जीवन शैली है जिसे जनकल्याण के लिये मानवमात्र धारण करता है और उसके बाद चर्चा है दो सम्बन्धसूचक वर्ग - मित्र और नारी की. इन दिनों सकल विश्व के साथ-साथ हमारा देश भी कोरोना वायरस के संक्रमण की महामारी की आपात और अप्रत्याशित स्थिति से गुजर रहा है. ऐसी आपातस्थिति में इन चार की परीक्षा तय है और इस परिप्रेक्ष्य में हम सबसे अहम् मुद्दे यानी- 'धीरज' की बात करेंगे.

धीरज अथवा धैर्य का शाब्दिक अर्थ होता है - धीरजता अर्थात् धैर्य को धारण करना गतिज परिप्रेक्ष्य में यदि हम चर्चा करें तो धीरज का एक अर्थ स्थिरता भी होता है. जैसा कि हमने आरम्भ में ही कहा था कि धीरज

जीवन में धैर्य की आवश्यकता



एक मनोवृत्ति है उसी सन्दर्भ में धीरज के कुछ भाष्यकार इसका एक अर्थ चित्त की दृढ़ता भी बताते हैं. सामान्य जनजीवन में भी जिन नायकों का हम अनुसरण करते हैं उनकी भी उल्लेखित विशेषता में सबसे अहम् विशेषता नायक का धीरोदात्त होना बताया जाता है. धीरोदात्त, शब्द संस्कृत से हिन्दी में आया है और इसका उपयोग विशेष के रूप में होता है जिसका अर्थ होता है दृढ़प्रतिज्ञ, विचारशील, बलवान और योद्धा नायक, जैसे- रामचरितमानस महाकाव्य में मर्यादा पुरुषोत्तम राम थे वे गंभीर, विनयी, क्षमावान, धीर और विनम्र थे. इस व्याख्या से भी यह परिलक्षित होता है की धीरज का हमारे जीवन में कितना महत्व है .

इस समय कोरोना संक्रमण के कारण लॉकडाउन में घर में ही रहने की जो अनिवार्यता है उसके लिये सबसे अधिक आवश्यकता धैर्य की ही होती है. संक्रमण की खबरें मन-

मस्तिष्क को विचलित करती है और इसी का यह दुष्परिणाम है कि लॉकडाउन में एकांत की ऊब से प्रायः मानसिक विचलन और मनोरोग की आशंका बलवती होती जा रही है. इस स्थिति से बचने का एक ही उपाय है कि हम धीरज को अपनायें और धैर्यवान बनें मगर क्षेत्र अनुभव बताते हैं कि धैर्यवान होना सरल काम नहीं है। यह कहना भी शायद गलत न हो कि आज की दुनिया में धैर्यवान बनना सबसे कठिन काम है।

धैर्यवान होना एक विशेषता है मगर सतत् धैर्यवान बनने के लिए अभ्यस्त होना भी सरल नहीं है लेकिन जो लोग धैर्यवान होते हैं उन्हें विभिन्न मार्गों से इसका फल मिलता है। हर व्यक्ति के अपनी दिनचर्या के लक्ष्य होते हैं और इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास मानवमात्र करता है. उद्गम से गंतव्य तक पहुंचना सरल काम नहीं होता बल्कि इस बात की संभावना होती है कि लंबे मार्ग में





समस्याओं के कारण मनुष्य की रफ्तार कम या फिर पूरी तरह रुक जाए। यदि व्यक्ति के पास पर्याप्त अनुभव और धैर्य न हो तो संभव है कि वह प्रारंभिक रुकावटों का सामना होने पर हताश व निराश हो जाए। इस हताशा व निराशा से वह आगे बढ़ने से रुक जाए। अगर वह हताशा और निराशा से अपने कदम रोक लेता है तो इसमें कोई संदेह ही नहीं रह जाता कि वह लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग से दूर हो जाएगा। लेकिन यदि व्यक्ति के पास पर्याप्त अनुभव और धैर्य हो तो यह दोनों तत्व उसे उद्देश्य तक पहुंचने में सहायता करते हैं और इससे उसकी सफलता की संभावना कई गुना बढ़ जाएगी।

धैर्य रखने का अर्थ शांति के साथ कदम उठाना और परिणाम की प्रतीक्षा करना है। उतावलेपन का अर्थ तुरंत परिणाम तक पहुंचने की प्रतीक्षा करना है कि यह मनुष्य की बहुत बड़ी कमियों में से एक है। जब कोई व्यक्ति खुद को किसी काम से रोक ले कि जिसे वह कर सकता हो तो ऐसे व्यक्ति के बारे में यह कहा जाएगा कि उसने धैर्य से काम लिया। इसलिए धैर्य की आम परिभाषा यह होगी कि खुद को ऐसे काम से रोकना जो लक्ष्य तक पहुंचने में रुकावट या उस तक देर तक पहुंचने का कारण बने। इस परिभाषा के तहत धैर्य अपने आप में कोई नैतिक गुण नहीं कहलाएगा बल्कि यह एक प्रकार का प्रतिरोध है जो मन पर काबू होने से प्राप्त होता है। यह प्रतिरोध ऐसी स्थिति में नैतिक विशेषता कहलाएगी जब किसी



धैर्यवान व्यक्ति का उद्देश्य नैतिक परिपूर्णता तक पहुंचना और ईश्वर की निकटता प्राप्त करना हो। इसलिए जीवन में लक्ष्य तक पहुंचने के लिए यह आवश्यक है कि मानव धैर्य के सदाचार को अपने जीवन का अंग बनाए और उन्नति का मार्ग प्रशस्त करे।

जीवन में धैर्य के साथ ही आगे बढ़कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। अक्सर हम कई बार धैर्य खो बैठते हैं और उन्नति के मार्ग से भटक जाते हैं। इसलिए जीवन में यह जरूरी है कि हम धैर्य बरकरार रखें। जीवन में सफलता की मंजिल तक पहुंचने के लिए धैर्य ही सच्चा सारथी है। कई बार हम जीवन की छोटी-मोटी रुकावटों से घबराकर धैर्य खो देते हैं और परिणामस्वरूप हमें जीवन में धोखा मिलता है। जब जीवन में आशाओं के बिंदुओं पर

विराम लग जाता है और कोई आगे बढ़ने के मार्ग की लौ नहीं दिखती तो केवल धैर्य ही एकमात्र ऐसा साधन है जो निराशा को आशा में बदल सकता है इसलिए मानव का धैर्यवान होना जरूरी है। जीवन के मूल्यों को संरक्षित रखने में धैर्य ही सबसे अहम मूल मंत्र है। कई बार हम तुरंत लाभ की प्राप्ति के लिए जीवन के मूल्यों को दाव पर लगाने में भी नहीं चूकते।

(प्रस्तुत लेख जन सम्पर्क विभाग के सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी श्री राजादुबे ने वर्तमान परिस्थिति कोरोना महामारी से बचाव के लिए लाकडाउन (घर में ही निरुद्ध) में रहने को धैर्य रखना समझाया है। केवल एक घटना ही नहीं जीवन यात्रा में आने वाली अनेकों विपरीत परिस्थितियों में भी धीरज रख कर निराकरण किया जाने की समझाईश दी गई है।)





डॉ. सी.एल.पांचाल

संसार का प्रत्येक प्राणी अपने सुख पूर्वक आवास के लिए ऐसे स्थान का चयन करने में सतत प्रयत्नशील रहता है कि वहां रहते हुए उसे लौकिक एवं परलौकिक सुखों का निरंतर और अधिक से अधिक लाभ मिलता रहे। जिसमें आरोग्यता, सुंदर ग्रहणी संतति लाभ, धन प्राप्ति, व्यापार एवं राजसेवा, सामाजिक लाभ, मान प्रतिष्ठा, शास्त्रीय ज्ञान और आत्मिक शांति अधिगत करने की सदैव ललक बनी रहे। इसलिए मानव ऐसी भूमि पर अपने आवास की महत्वकांक्षा रखता है जहां पर सब प्रकार की विपत्तियों एवं बाधाओं से परे रहकर इहलौकिक एवं परलौकिक दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वाह कर सके। इसी उद्देश्य को मन में संजोकर वह ऐसे ज्ञानियों की खोज में निकलता है जहां भवन एवं आवास की पूर्ति के लिए इसकी आकांक्षाओं के अनुरूप भूमि चयन विधि एवं शुभ प्रक्रिया तथा भवन निर्माण का सही समय और भवन निर्माण की समुचित जानकारी प्राप्त हो सके।

भूमि चयन के लिए नगर कॉलोनी, पास पड़ोस, जल व्यवस्था, प्राकृतिक सौंदर्य, यातायात आदि प्रवृत्तियों पर भी उनकी निगाह होती है और इसके साथ ही भूमि का चयन एवं क्रय से अपने लाभ की स्थिति भी वह मन में रखता है। वाह्य जानकारी तो समाज ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों एवं वास्तु शास्त्र के अनुशीलनकर्ताओं की शरण में जाकर उनकी सहमति एवं सम्मति प्राप्त करने के उपरांत ही वह भूमि चयन एवं निर्माण की योजना को मूर्तरूप देना चाहता है।

**नदी श्रोत्रियो राजा देवज्ञो न चिकित्सकः
शजवासोन कर्तव्यः**

जिस स्थान पर नदी (जलाशय कूप आदि) कर्मकाण्डी विद्वान ज्योतिषी, शासक और चिकित्सक नहीं करें वहां आवास नहीं करना चाहिए और उस भूमि को त्यागना ही उचित है। साथ ही ऐसे भवन में भी निवास नहीं करना चाहिए जहां:-

वास्तु शास्त्र परिचय



“**स्व. डॉ. सी.एल. पांचाल का दो दशक पूर्व जीवन वैभव में प्रकाशित यह लेख उनकी स्मृति में पुनः प्रकाशित किया जा रहा है, वे ज्योतिष के प्रति समर्पित एवं उनकी ज्योतिषियों को संगठनात्मक रूप से जोड़े रखने की असीमित शक्ति थी। उन्हें श्रद्धांजलि के रूप में उनका लिखा हुआ आलेख पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत है। :- सम्पादक**”

**दुष्ट भार्या शंठ मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायक।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः।**

दुःशीला पत्नी, मूर्ख मित्र, प्रत्युत्तर दाता सेवक और सर्प जिस घर में रहता हो वहां किसी भी प्राणी अथवा गृहस्वामी के लिए अरिष्ट हो सकता है। अतः भवन निर्माण से इन सब बातों का संबंध हो जाए तो जीवन में अशांति और मृत्यु कष्ट भय बना रहता है जैसा कि शास्त्रों में लिखा है अतः प्राणी मात्र के मन में यह जिज्ञासा स्वतः उत्पन्न होती है की वास्तु शास्त्र क्या है और उसमें भवन निर्माण की जो विधियां प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अपने अनुभव और शास्त्रीय वाणी के द्वारा इस संसार में प्राणी मात्र के परोपकार की दृष्टि से जो भवन निर्माण विधि प्रकट की हैं उसके संबंध में वास्तु शास्त्र व शिल्प शास्त्रों के माध्यम से शुभ एवं सरलतम रीति से भवन निर्माण और उसमें द्वार दिशाओं की जानकारी ली जाए जिससे सर्वविधि सौख्य प्रदाता भवन का

निर्माण किया जा सके अतः भूमि पर निर्मित होने वाले नगर देवालय एवं समस्त सुविधाओं से युक्त आवास स्थल के लिए कुछ नियमों एवं सिद्धांतों के आधार पर निर्माण संबंधित कार्यों का पथ प्रदर्शक “वास्तु शास्त्र” के नाम से जाना जाता है।
वास्तु शास्त्र के अनुसार भवन निर्माण हेतु आवश्यक निर्देश

1. भूमि का चयन करते समय दिशा एवं आकार का ध्यान सर्वप्रथम रखना आवश्यक है। चतुष्कोण अथवा समकोण दीर्घ चतुष्कोण वाले भूखंड पर भवन निर्माण सब प्रकार से शुभ एवं मंगलदायक होता है।
2. विशाल स्थल ऐश्वर्य प्रदान कारक होता है किंतु स्थल किसी भी दिशा में कम अधिक नहीं होना चाहिए।
3. त्रिभुज आकृति वाले भूखंड का चयन भवन निर्माण के लिए कभी नहीं करना चाहिए।
4. उत्तर दक्षिण दिशा में भूखंड की लंबाई की अपेक्षा पूर्व पश्चिम की लंबाई अधिक हो तो अधिक श्रेष्ठ होता है।
5. उत्तर से दक्षिण में रिक्त स्थल अधिक हो तो चाहे वह भवन हो या कारखाना, मंदिर हो या झोपड़ी अवश्य ही पतन का कारण एवं विनाशकारी होती है।
6. पश्चिम दिशा की अपेक्षा पूर्व दिशा में स्थल अधिक खाली रहे तो वह शुभ रहता है।
7. भवन का समस्त भारी सामान एवं स्थाई रूप से रखने योग्य वस्तुएं दक्षिण नेत्रुत्य या पश्चिम नेत्रुत्व दिशा में





रखना श्रेष्ठ होता है।

8. दो विशाल भूखंडों के मध्य स्थित एक छोटा अथवा सकड़ा भूखंड भी उत्तम नहीं होता है उस पर निर्मित भवन से अत्यधिक कष्ट होते हैं।
9. पूजा स्थल का निर्माण सदा ईशान कोण में ही करना शुभ होता है आवश्यकता में पूर्व ईशान कोण के समीप किया जा सकता है।
10. रसोई घर का निर्माण सदैव अग्नि कोण में ही करना उत्तम होता है। विशेष परिस्थिति में पूर्व अग्नि कोण के समीप दक्षिण अग्नि कोण के समीप किया जा सकता है।
11. छत पर पानी की टँकियां दक्षिण पश्चिम दिशा में रखना शुभ है। उत्तर अथवा ईशान कोण में कदापि नहीं रखना चाहिए।
12. भवन का मुख्य द्वार जहां तक संभव हो एक ही रखना चाहिए जिससे मांगलिक चिन्हों से युक्त करना शुभ होता है।
13. सभी द्वारों एवं खिड़कियों की ऊंचाई एक सूत्र में रखना चाहिए शुभ होती है।
14. दक्षिण एवं नैऋत्य दिशा वाले कमरों में जितना भारी सामान रहेगा उतना ही गृहस्थ जीवन का सुख अधिक प्राप्त होता है।
15. भवन की पूर्व दिशा में ऊंचे वृक्ष ऊंचे भवन नहीं होना चाहिए अशुभ होते हैं। पश्चिम दिशा में वृक्ष लगाना शुभ होता है।
16. समान रेखाओं में पूर्व - उत्तर की ओर मार्ग वाले स्थल का चयन भवन निर्माण के लिए श्रेष्ठ होता है।
17. भवन के निर्माण में भूखंड पर भवन निर्माण करते समय भवन दक्षिण पश्चिम दिशा में ऊंचा तथा पूर्वोत्तर में नीचा होना चाहिए। दीवारें भी इसी प्रकार बनाना शुभ होती है।
18. आग्नेय, नैऋत्य तथा वायव्य की दिशाओं में कुआं अथवा गड्ढे रहने पर ऐसे ग्रह में सदा कलह (झगड़ा+झंझट) एवं अशांति रहती है।
19. भूखंड का पश्चिम प्रदेश उन्नत होना चाहिए तथा भूमि पूर्व की ओर ढलाव युक्त उत्तम होती है।
20. मुख्य रूप से गृह निर्माण के संदर्भ में दरवाजे, खिड़कियां, चूल्हा, कुआं,



स्नानगार, शयन कक्ष, शौचालय का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

21. वास्तु शास्त्र में चौकोण आकृति वाली भूमि श्रेष्ठ मानी जाती है यह वास्तु शास्त्रियों का सर्व सम्मत मत माना गया है।
22. वास्तु पूजा के अभाव में नवीन ग्रह में आवास करने से नाना प्रकार के कष्ट होते हैं। अतः वास्तु पूजा करना जरूरी है।
23. भवन का द्वार जिस दिशा में बनाना है उस ओर की लंबाई को 9 भागों में विभाजित कर 5 भाग दाईं ओर से तथा 3 भाग बायीं ओर से छोड़कर शेष एक भाग में अथवा सातवें भाग में द्वार का निर्माण करना चाहिए।
24. जल का प्रवाह एवं निकास पूर्व, वायव्य और ईशान एवं उत्तर दिशाओं के अतिरिक्त अन्य दिशाओं में अशुभ एवं कष्टप्रद होता है।
25. भवन में सजावट के लिए युद्ध एवं संग्राम के चित्र, पत्थर एवं लकड़ी से निर्मित राक्षसों की मूर्तियों, सूअर, चीता, व्याघ्र, सियार, सर्प, गिद्ध, उल्लू, कबूतर बाज काक बगुले आदि के चित्र शुभ नहीं होते इन्हें घर में नहीं लगाना चाहिए।
26. द्वार प्रकरण में दिए गए चित्र के अनुसार द्वार बनाना चाहिए। दाये एवं बाएं भाग पर विचार भवन से बाहर निकलते समय की दिशा से करना चाहिए।
27. मल मूत्र का त्याग का स्थान शौचालय वायव्य कोण में बनाना शुभ होता है। आवश्यकता या स्थान भाव में किसी भी दिशा में बनाया जा सकता है किंतु शौच के समय स्वयं के मुख की दिशा दक्षिण

या उत्तर ही होनी चाहिए।

28. भवन निर्माण में नवीन काष्ठ ही काम में लाना चाहिए। पुराना काष्ठ कभी काम में नहीं लाना चाहिए शुभ नहीं होता।
 29. वास्तु शास्त्र के अनुसार दक्षिण और पश्चिम में भवन का निर्माण शुभ नहीं उत्तर पूर्व में भवन बनाना शुभ होता है।
 30. जिस भूमि पर भवन बनाना हो उस भूखण्ड के बीचो-बीच आदमी की ऊंचाई के बराबर खड्डा खोदकर पुरानी मिट्टी फेंकने तथा अच्छी मिट्टी भरना शुभ होता है उसमें भूमि दोष मिट जाता है।
 31. यदि मुख्य भवन पर प्रातः 9:00 बजे से मध्याह्न 3:00 बजे तक वृक्षों की छाया रहे तो अशुभ, कष्टदायक भवन होता है।
 32. भवन में सीढ़ी द्वार पूर्व- दक्षिण दिशा में रखना शुभ फल कारक होता है।
 33. एक से अधिक द्वार भवन में बनाना हो तो पूर्व के अतिरिक्त पश्चिम उत्तर अथवा दक्षिण में बनाना अशुभ है।
 34. अतिथियों का स्थान कक्ष उत्तर या पश्चिम दिशा की ओर बनाना चाहिए।
 35. चौकीदार या गार्ड का निवास घर गृह सीमा के अंतर्गत बाये भाग में होना चाहिए।
- अगर भवन निर्माण करते समय वास्तु शास्त्र के निर्देशों पर ध्यान दिया जाए तो मनुष्य भवन में निर्माण के पश्चात सुख शांति से रह सकता है। आजकल दिनोंदिन वास्तु शास्त्र के प्रति आस्था एवं विश्वास बढ़ता जा रहा है। मैंने इसमें जो विचार प्रस्तुत किए हैं जो वास्तु शास्त्र पर आधारित हैं भवन निर्माण प्रक्रिया में हितकर सिद्ध होंगे। भवन निर्माण कराते समय अच्छे वास्तु शास्त्री एवं ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता से मार्गदर्शन लेकर ही कार्य करें। जो भवन बनवाया जाए वह आपके लिए मंगलदायक हो।





श्रीमती किरण शर्मा एवं डॉ. डी.आर. शर्मा

से च्यूरेटेड फेटी एसिड अधिक खाने से और उसका पाचन सही नहीं होने के कारण तथा शरीर में व्यायाम के अभाव के कारण कोलेस्ट्रॉल का स्तर सामान्य से अधिक बढ़ जाता है। एथिरोस्केरोसिस की स्थिति उत्पन्न होती है। कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाने से आर्टरी सिकुड़ जाती है। इसमें हार्ट को पोषण पहुंचाने वाली कोरोनरी आर्टरी प्रभावित होती है तथा हार्ट डीसीज के लक्षण दिखने लगते हैं। कोलेस्ट्रॉल का प्रति व्यक्ति सामान्य स्तर 80 से 180 मिली ग्राम प्रति 100 सी.सी. रक्त होता है। रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा सामान्य रहना शरीर के लिए उपयोगी है। इसके बढ़ जाने पर खतरे की संभावना बढ़ जाती है। कोलेस्ट्रॉल मस्तिष्क, स्नायुतन्तु, एड्रीनल कार्टेक्स तथा लीवर के कार्य में सहायक होता है। मानव शरीर के सभी अंगों में हृदय का महत्व सबसे आधिक है क्योंकि सारे शरीर को ब्लड पहुंचाने की जिम्मेदारी हृदय की ही होती है। मनुष्य का हृदय एक हालो मस्कुलर कोन शेड आर्गन है यह आकार में बंदमुट्टी के ही बराबर होता है।

हृदय रोग से बचाव कैसे करें

शरीर में प्राण का संचार रक्त वाहिनी के हृदय में प्रवेश कर नियमित संचालन संचार करने से जीवन चलता है इस अनवरत रक्त कार्य को हमारा हृदय का शरीर के लिए संचालन कहते हैं।

हृदय का आकार

हृदय 3 लेयर से ढका हुआ रहता है वे तीन लेअर क्रमशः पेरिकाडियम, मायोकार्डियम और एंडो कार्डियम होती

हृदय रोग के कारण और बचाव



हार्ट अटैक के मुख्य कारण

- » कोरोनरी आर्टरी में कोलस्टाल जमा होना।
- » ट्राई ग्लिसराइड का उच्चस्तर
- » अधिक उच्च रक्त चाप बना रहना।
- » शरीर का वजन अधिक होना।
- » नशीले पदार्थ धूम्रपान, तम्बाकू का सेवन नियमित करते रहना।
- » अधिक तनाव ग्रस्त रहना
- » जीवनशैली में गड़बड़ी शारीरिक श्रम की कमी।
- » शक्ति वृद्धक खाद्यान्न की कमी, (एन्टी आक्सीडेन्ट की कमी)
- » नियमित शारीरिक श्रम अथवा व्यायाम नहीं करना।
- » हेरिडेटरी अर्थात हृदय की बीमारी परिवार में पहले से ही चल ही हो।
- » शरीर में मैगनीशियम की कमी होना।

है। हृदय का कुल वजन महिलाओं में इसका वजन 225 ग्राम तथा पुरुषों में इसका वजन लगभग 310 ग्राम होता है। हृदय जो शरीर में रक्त का पम्प करता है जोकि सक्सीन्ग और पंपींग कहलाता है। सारे शरीर के अशुद्ध रक्त को Suck करके लंग्स (फेफड़ों) में

भेजता है। लंग्स में गोसेज का एक्सचेंज होकर कार्बनहाइड्राक्साईड बाहर निकालता है। आक्सीजन के साथ मिश्रित (आक्सीजेनेटेड) रक्त पुनः फेफड़े से हृदय में आती है। वहां से महाधमनी (अओर्टा) के द्वारा पुनः सारे शरीर में पम्प कर दिया जाता है। ठीक ढंग से कार्य करने के लिए हृदय को पोषण की आवश्यकता होती है। इसके लिए कोरोनरी आर्टरी से हार्ट को पोषण मिलता है। यह हार्ट के आसपास ताज की तरह होता है। हार्ट अटैक का सबसे बड़ा कारण कोरोनरी आर्टरी में कोलेस्टाल का जमा होना ही होता है।

कोरोनरी आर्टरिज (धमनी) में रुकावट के लक्षण

- (1) शरीर में असहज दबाव महसूस करना, छाती के बीचों बीच दर्द होना और कुछ देर तक बमे रहना।
- (2) दर्द का कंधे, गर्दन और बायींभुजा तक फैलना।
- (3) यह दर्द हल्का अथवा जोर से भी हो सकता है।
- (4) दर्द सीने में, पेट के उपरी भाग में अथवा गर्दन पर भी हो सकता है।





कोलस्ट्रॉल क्या है ?

हृदय अंदर से चार चेम्बर होते हैं, इनमें भी चार वाल्व होते हैं। लेफ्ट एटरिया, राईट एटरिया लेफ्ट वेन्ट्रीकल और राईट वेन्ट्रीकल राईट एटरिया में अशुद्ध आक्सीजन रहित रक्त जिसे तन्तुओं ने आक्सीजन रहित कर दिया है जिसे वेंस द्वारा पूरे शरीर से लाया जाता है। सुपरियर वेनाकेवा शरीर के ऊपरी भाग तथा इनफीरियर वेनाकेवा द्वारा शरीर के नीचले भाग का रक्त राईट वेन्ट्रीकल में आता है जो सिकुड़कर अपनी पल्मोनरिज आर्टरी द्वारा फेफड़े में पम्प कर दिया जाता है। फेफड़ों में गोसेज का विनिमय होकर आक्सीजेन रक्त पल्मोनरिजवेन्स के द्वारा बाई तरफ की एट्रीनम से बाईतरफ की वेन्ट्रीकल में जाता है। वेन्ट्रीकल सिकुड़कर बहुत वेग से रक्त को एरोटा में भेजता है, जिसे एरोटा द्वारा शरीर में पम्प कर दिया जाता है, इस प्रकार हृदय लगातार कार्य करता रहता है इसलिए उसको आक्सीजन और न्यूट्रीशन की जरूरत होती है। जोकि रक्तवाहिनी नलियों से हृदय को प्राप्त होता रहता है।

ये रक्तवाहिनी नलियां दो होती हैं।

- 1) राईट कोरोनरी आर्टरी
- 2) लेफ्ट कोरोनरी आर्टरी

इस प्रकार हृदय एक सशक्त मांसपेशी के तन्तु द्वारा रचना होकर प्राणी के पूरे जीवन काल में रातदिन चुपचाप लगातार कभी नहीं थकने वाले पम्प की तरह अपना काम स्वतः करता रहता है। एक मिनट में यह 72 बार धड़कता है। मनुष्य के जीवन काल का हिसाब लगाए तो यह लगभग ढाई



करोड़ बार धड़कता है। इस प्रकार हमारे स्वस्थ जीवन के लिए हृदय का सही संचालन आवश्यक है। शरीर में हृदय की भूमिका:-

- 1) शरीर के लिए हृदय का काम पूरे शरीर के लिए रक्त एवं आवश्यक कैलोरीक पौष्टिक आहार पहुंचाना।
- 2) शरीर के एकभाग से दूसरे भाग में हारमोन्स व न्यूरो केमिकल के वितरण में सहायता करना।
- 3) हृदय तक आने वाले रक्त को आक्सीजन प्राप्त करने के लिए फेफड़े तक भेजना।
- 4) रक्त की शुद्धता के लिए अनावश्यक तत्वों को गुरदे तक ले जाने में सहयोग करना किडनी रक्त से निरर्थक एवं बेकार तत्वों को अलग कर देती है। हृदय के चारचेम्बर एक सीरीज में होते हैं जोकि शरीर से इकट्ठे किए हुए अशुद्ध रक्त को लयबद्ध तरीके से फेफड़े को सप्लाई करते हैं तथा फेफड़े द्वारा शुद्ध किए गए रक्त को पुनः प्राप्त करते हैं और दुबारा इसरक्त को पूरे शरीर में पम्प कर देते हैं।

हृदय को पुष्ट रखना

हमें अपने जीवन के लिए अपने

हृदय को पुष्ट रखना आवश्यक है। ताकि जीवन सुखी और स्वस्थ रह सके तथा जीवन में जीवन वैभव रह सके।

- 1) कोलस्ट्रॉल 130 से 160 मिलीग्राम रहना चाहिए।
- 2) शराब ओर धुम्रपान से दूर रहना चाहिए।
- 3) लम्बे समय तक स्ट्रेस अर्थात दिमागी तनाव नहीं रखना चाहिए।
- 4) स्वास्थ्य के लिए अलाभप्रद भोज्य पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए।

5) नियमित व्यायाम करना चाहिये। यथा संभव प्रातः एवं सायं टहलना चाहिए।

6) शरीर की आवश्यकता से अधिक भोजन नहीं करना चाहिए। तेल, अधिक फेटी, अधिक शुगर की मात्रा के पेय अथवा भोज्य पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए।

7) अपनी दिन चर्या नियमित होनी चाहिए। समय पर भोजन, समय पर सोना और समयपर सूर्योदय पूर्व जगना चाहिए।

8) मानसिक तनाव को कम करने के लिए ध्यान, योग तथा प्राणायाम करना चाहिए।

9) जीवन की पुरानी कठनाईयों का स्मरण करके अनावश्यक तनाव नहीं पाले। भविष्य के हवाई किले बनाकर अनावश्यक शक्ति का हास न करें। भविष्य के प्रति आशावान बने लेकिन हमेशा वर्तमान में जीए। वर्तमान से संतुष्ट रहें। उपरोक्त बातों का ध्यान रखने वाला व्यक्ति का मन प्रसन्न रहेगा और हृदय भी स्वस्थ रहेगा। सुखी जीवन का आधार भी यही है।



'रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेहु जो जाननिहारा'

द्वारिका प्रसाद नायक

चित्रकूट-वास के समय भगवान श्री राम से मिलने तीन टोलियां आईं 1. देव 2. ऋषिगण और 3. कोल-किरात। तीनों के उद्देश्य और भाव में अंतर होने से इनके प्रति भगवान के व्यवहार में भी तदनुरूप अंतर आया। इस अंतर को समझने के लिए इन चार मुद्दों पर परीक्षण आवश्यक है-1. क्या लेकर आए, 2. क्या लेकर गए, 3. उनका उद्देश्य व 4. उनकी मन स्थिति। रस परीक्षण के आधार पर ही तुलसी के अनुपात में देवताओं की टोली के आगमन का वर्णन केवल चार चौपाइयों में किया। ऋषि मुनियों के आगमन की चर्चा चार चौपाइयों के अतिरिक्त एक दोहे में की, लेकिन कोल-किरातों से भेंट की चर्चा 19 चौपाइयों और 2 दोहे में की है। इन तीनों में से प्रत्येक के साथ भगवान ने भी भिन्न-भिन्न व्यवहार इन चार मुद्दों पर परीक्षण के अनुकूल ही किया है।

प्रथम टोली को भगवान के पास पहुंचने पर मुदिता हुई, दूसरी को मार्ग में ही लेकिन तीसरी टोली को प्रभु आगमन का समाचार सुनकर घर हो, पर प्रसन्नता मुदिता हो गई और 'मुदिता' भक्ति के 8 लक्षणों में से एक है। 1. पुलक (मुदिता) 2. अश्रुपात 3. कंपन 4. रुदन 5. हास्य 6. स्वेद 7. मूर्च्छा 8. स्वर-भग। साधना के 4 लक्षणों में भी मुदिता आती है-1. करुणा 2. मैत्री 3. मुदिता और 4. उपेक्षा।

तो, कोल-किरातो (वनवासी) प्रभु आगमन का समाचार सुनकर इतने प्रसन्न हुए मानो 9 निधि घर आ गई हो। प्रत्येक टोली में एक से दूसरे को अधिक प्रसन्नता हुई है। प्रभु ने भी तदनुसार उनसे पृथक-पृथक व्यवहार किया। प्रथम टोली के आगमन पर प्रभु ने उन्हें प्रणाम किया, दूसरी टोली का दंडवत



यह आलेख सेवा निवृत्त आई.पी.एस. आफिसर श्री डी.पी. नायक द्वारा लिखा गया था उनकी भावना प्रधान आलेख को जीवन वैभव के तीन दशक पूर्व के अंक से पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। :- सम्पादक

प्रणाम अर्थात देवताओं से अधिक आदर, लेकिन तीसरी टोली से भेंट में सबको प्रेम परिपूर्ण, प्रेमास्पद पाकर पिता पुत्र का संबंध बन गया-**'कहीं प्रिय वचन सकल सलमाने'** इस तीसरी टोली की भेंट होते ही कोल किरातों के वनवासियों के **'पुलक शरीर नयन जल वाढे'** यानी ऊपर वर्णित भक्ति के लक्षणों में अतिरिक्त से लक्षण इस टोली में पाए। इसलिए प्रभु ने **कहि प्रिय वचन सकल सनमाने और राम सकल वन चर तब तोसे, कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे क्योंकि रामहि केवल प्रेम पियारा- जानि लेहु जो जाननिहारा।**

देवताओं ने प्रभु को अपने असहनीय दुःख सुनाएं, भगवान ने मौन उत्तर दिया-मर्यादा पुरुषोत्तम है- ना मनुष्य होकर देवताओं को स्पष्ट आश्वासन कैसे दे सकते हैं इसीलिए मौन, उत्तर। देवताओं ने केवल प्रभु श्रीराम के दर्शन

कर उन्हीं को प्रणाम किया लेकिन मुनियों ने सीता-राम-लक्ष्मण-भक्ति ज्ञान-वैराग्य के दर्शन किए क्योंकि तीनों प्रकार के साधक उनमें है। देवता आश्वस्त होकर लौट गए, ऋषि-मुनियों ने श्रीराम को हृदय से लगा लिया और आशीष दिया- ऐसा सुख देवताओं का नहीं, लेकिन तीसरी टोली तो चले रंक जुनु लुटन सोना-कैसे चले कंदमूल फल भाई भाई दानों लेकर देवता व ऋषि मुनि कुछ नहीं लाए। तीसरी टोली का प्रेम व सेव्य भाव देखकर ही प्रभु ने **'कहीं प्रिय वचन सकल सनमाने'** सबको अपना बना लिया। प्रेम भाव में सर्वप्रथम आत्म-विस्मृति का उदय होता है। निश्चल प्रेम की अवस्थाएं हैं-1. आत्म-विस्मृति (शांत रस) 2. सख्य 3. दास्य 4. वात्सल्य और 5. कांत (श्रृंगार रस) जो सर्व भावेन आत्मसमर्पण करके प्रेमास्पद में अपने को विलोम करने की साधना है। पहली में प्रेमास्पद के समक्ष पहुंचने पर अपने को भूल जाओ, दूसरी में सखा बनकर सलाह देना, तीसरी में किस वस्तु से या कैसे प्रभु की सेवा कर सकते हैं, चौथी में वात्सल्य भाव से प्रेमी अपने प्रेमास्पद की आवश्यकताओं उसी प्रकार ध्यान रखता है जैसे माता-पिता अपनी संतान





का और अंत में कांत भाव जिसमें भक्त और भगवान में समस्त दूरियां समाप्त हो जाती हैं जैसे पति पत्नी में कोई गोपनीयता नहीं, कोई पर्दा नहीं। शबरी प्रभु के दर्शन कर अपनी सुध बुध भूल गई। **शबरी परी चरण लपटाई तथा प्रेम मगन सुख वचन न आवा।** प्रेम के अतिरिक्त में वह सुमाधिस्थ हो गई। प्रेम भी है। और होश भी हो तो प्रेम कच्चा है अधूरा है। जिस क्रिया को करते-करते समाधि में प्रवेश होता है, उसी क्रिया को करते-करते समाधि से व्युत्थान होता है। भगवान किसी भक्त के द्वारा अर्पित नैवेद्य के प्रकार के या उत्तमता के पारखी नहीं है, वे तो केवल भाव के भूखे हैं। भोजन के लिए तो उनको केवल भाव चाहिए। शबरी के जूठे बेर खाए तो विदुर के यहां साग ही खाई अन्यथा वे भक्तों के अहंकार को खाया करते हैं, जो उन्हें कभी नहीं सुहाता और उन्होंने कभी भी, किसी का भी अहंकार सहन नहीं किया चाहे वह उनका स्वजन ही क्यों न हो।

भगवान ने वन गमन में केवल शबरी के यहां कंदमूल फल तीनों खाए हैं- वह भी प्रेम सहित और बारम्बार वखानि क्योंकि रामहि केवल प्रेम पियारा जानि लेहु जो जाननि द्वारा। वाल्मीकि के आश्रम में 'मुनिवर अतिथि प्रान -प्रिय पाए, कंद मूल फल मधुर मंगाए' पर श्री राम प्रिय सौमित्र सहित खेल फल खाये। चित्रकूट से प्रस्थान कर अत्रि के आश्रम में भी प्रभु ने केवल मूल और फल खाए, कंद गायब। ऋषि सर भग सुतीक्ष्ण और कुंभज आदि के आश्रम में तो खाने का प्रश्न ही नहीं उठा। शबरी ने वात्सल्य भाव से प्रभु को नैवेद्य लगाया था।

वात्सल्य भाव के पश्चात कोल-भीलो के प्रेम का अंतिम अर्थात् कांत भाव में प्रवेश शृंगार रस का वर्णन करने में तुलसीदास जी पर्याप्त सावधानी बरतते हैं। चर्चा तो करते हैं, मर्यादा भी रखते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम की लीला के मर्यादा पूर्ण ग्रंथ में पति पत्नी के दांपत्य



प्रेम के रस को कैसे स्पष्ट करें? अतः वे एक ही शब्द में दांपत्य प्रेम का अर्थ-पूर्ण वर्णन करते हैं- स्वामी सखा पितु, मातु, गुरु जिनके सब तुम तात यहां सब का अर्थ सिवाय पति के और कुछ नहीं है। एक ही शब्द में शृंगार रस के भाव का वर्णन कर दिया। पति ही पत्नी का सब कुछ होता है। संकोच साहित्य तो कांत भाव में ही होता है। दांपत्य में कोई आवरण नहीं होता वह तो सर्वथा अनावृत ही होता है। इसके अतिरिक्त सब भावों में अर्थात् स्वामी-सखा-वेद-गुरु-पिता-माता-भाई-बहन-पुत्र-पुत्री, इनमें कोई ना कोई प्रतिबंध या मर्यादा होती है। सर्वथा संकोच साहित्य तो केवल कांत भाव में ही संभव है। यही सर्व भावे आत्म-समर्पण भाव है जोकि प्रियतम कि प्रत्येक आज्ञा का निसंकोच पालन करने को उद्धृत करता है, प्रेरित करता है।

**'हम सेवक परिवार समेता,
नाथ न सकुचव आयसु देवा'-**

ऐसे संपूर्ण- समर्ण वाले भाव जो मुनियों के मन के लिए भी अगम थे, जो भाव ऋषि-मुनियों के मन में भी नहीं उठे इसलिए-

'वचन कीरतन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन' क्योंकि कोल कीरातों के

वचन में निश्चल प्रेम था।

प्रेम एकांगी नहीं ही सकता और न ही किसी साधक के अभ्यास से बढ़ता है। यह तो क्षति, पूर्ति, निवृत्ति से रहित है। देवताओं और ऋषि-मुनियों का प्रेम एकांगी था स्वार्थ का पुट था उसमें। देवता रक्षा के साथ-साथ स्वर्ग की कामना करते थे। ऋषि मुनि प्रभु के दर्शन को अपनी साधना का फल या फलस्वरूप प्राप्त हुआ मानते थे और अपनी साधना के मार्ग में विन्ध-निवारण की कामना रखते थे तथा मोक्ष के अभिलाषी थे लेकिन प्रेमास्पद से आत्मीय संबंध स्थापित कर अपना जो कुछ है, सब उसी का मान कर, उसी को अर्पण कर अपने लिए कुछ ना रखना और कुछ न मांगना ही सच्चा निरापद, निश्चय प्रेम है, जो कोल किरातों ने व्यक्त किया। यही प्रेम की पूर्णता व सफलता है। दांपत्य में ऐसा ही प्रेम उभय पक्षी होता है, होना चाहिए। यही प्रेम कोल भीलो था। इसलिए-

**'वचन किरातन्ह के सुनत,
जिमी पितु वाला बैन'**

प्रभु स्वयं अनिर्वचनीय प्रेम स्वरूप है। उस प्रेम की उपलब्ध उसी को हो सकती है जिसे किसी सांसारिक सुख की आकांक्षा नहीं जिसे किसी स्वास्थ्य की कामना नहीं, जिसे बदले मोक्ष की कामना नहीं, जिसे केवल प्रभु के प्रेम के अतिरिक्त कोई अभिलाषा नहीं-

**'जाहि न चाहि कबहुं कछु,
तुम सन सहज सनेह'**

भगवान इसी प्रेम रस के कारण पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। इसी प्रेम रस को लुटाने के लिए वन गमन दिया क्योंकि you can kill by proxy but you cannot love by proxy. अयोध्या में बैठे-बैठे रावण को मार तो सकते थे, लेकिन भक्तों की प्रेम रस का मान नहीं कर सकते थे क्योंकि-

**'रामहिं केवल प्रेमपियारा
जानि देहु जो जान निहारा'**





हमारे देश भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही सनातन संस्कृति के अंतर्गत व्रत पर्व तथा त्योहारों का चयन ऋतुओं के अनुसार किया गया है जैसे कि वर्षा ऋतु खत्म होने के पश्चात नवरात्री, दशहरा एवं दीपावली का त्योहार आता है जिसमें समस्त परिवार अपने घरों को साफ सुथरा लीपाईं पुताईं आदि की जाती है। और स्वच्छता की जाती है। जिससे कि विषैले जीव जंतु मच्छर कीड़े आदि समाप्त होकर स्वास्थ्य की दृष्टि से आवास की उपयुक्तता होजाती है। नवरात्री में शक्ति की देवी महाकाली, समृद्धि की देवी महालक्ष्मी तथा विद्या बुद्धि की देवी मां सरस्वती की आराधना की जाती है। दशहरे पर्व पर विजय मुहूर्त में शस्त्र एवं वाहन के पूजन करने की परम्परा है। जिससे हमारी क्रिया शीलता और शौर्य का संस्कार मिलता है।

अपने आवास एवं स्वयं को स्वच्छ रखना

त्योहारों तथा व्रत पर्व के दिन समय हमारी प्राचीन परंपरा है कि अपने आवास और स्वयं को स्वच्छता से परिपूर्ण रखना इसके लिए अधिक से

प्राचीन संस्कृति के संस्कार सुखी जीवन का आधार



रसोई घर और पूजा स्थान की शुद्धि

अधिक ध्यान रखना चाहिए जैसे कि प्राचीन से परंपरा है कि घर में प्रवेश करने के समय अपने जूते घर के बाहर ही उतारेजाते हैं यह प्रक्रिया वर्तमान में भी अपनानी चाहिए तथा प्रवेश करते समय अपने हाथ-पांव पानी से धोकर स्वच्छ करके प्रवेश करना चाहिए। जिससे बाहर की अशुद्धि घर में प्रवेश नहीं कर सके।

प्राचीन परंपरा है कि हमारा भोजन कक्ष तथा रसोई घर में सदैव शुद्धता बनी रहे इसके लिए शुद्ध वस्त्र के साथ रसोई घर में प्रवेश करना चाहिए पर्याप्त रोशनी रसोई घर में होनी चाहिए। कुछ परिवारों में या परंपरा है कि स्नान करने के बाद गीले अथवा शुद्ध वस्त्रों को पहन कर ही भोजन बनाया जाता रहा है, ताकि बने हुए भोजन में किसी प्रकार की अशुद्धि ना रहे। ठीक उसी प्रकार पूजन स्थान भी पृथक होकर शुद्धता पूर्ण रखे जाने का पूर्व परंपरा है जिससे हमें भी निर्वहन करना चाहिए दिन भर कार्य में व्यस्त रहने के पहले अपने इष्ट देवता का ध्यान एवं पूजन शुद्ध मन से करते रहना चाहिए

शाकाहारी जीवन

हमारी प्राचीन संस्कृति में व्यक्ति को शाकाहारी जीवन बिताना महत्वपूर्ण माना गया है। जीव हिंसा करना





सनातन संस्कृति में उचित नहीं माना गया। शाकाहारी जीवन से हमारे ऋषि मुनि सैकड़ों वर्ष की उम्र को प्राप्त हो जाते थे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए शाकाहारी जीवन को महत्व देना चाहिए जोकि जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, यह आज भी सिद्ध हो रहा है। कई प्रकार की विषैली बीमारियां जंगल अथवा पानी में रहने वाले जीव जन्तुओं के मांस के सेवन से होती है। यह आज के पोषण विशेषज्ञों ने अपने अध्ययन में पाया है।

माता, पिता, गुरु एवं अतिथि को देवता के समान मानना

हमारे भारतवर्ष में माता पिता गुरु एवं अतिथि को देवता के समान माना गया है कहने का अर्थ है कि हमारे घर में जो भी उपस्थित हो वह देवता के समान है, उनका आतिथ्य एवं सम्मान आदरपूर्वक करना चाहिए तथा घर में निवास करने वाले माता पिता को तो देवता के समान आदर करना चाहिए, ये जीवन के प्रथम गुरु हैं जिनसे जीवन आरंभ करने के लिए संस्कार का पाठ सिखाया जाता है। इसके बाद पाठशाला में जीवन यात्रा संचालन के



लिए शिक्षा प्राप्त की जाती है। इसकारण शिक्षा देने वाले गुरु को भी देवता के रूप में माना गया है। वेदों में इनके लिए कहा गया है मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः, आचार्य देवो भवः, तथा अतिथि देवो भवः।

आज के परिप्रेक्ष्य में उक्त की बहुत आवश्यकता है। हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कार को छोड़कर पाश्चात्य सभ्यता में अधिकतम परिवार के अन्तर्गत घर में आए हुए मेहमान को सम्मान देना तो दूर माता पिता को भी सम्मान नहीं दिया जाता उन्हें बोझ स्वरूप

समझा जाकर अपनी स्वतंत्रता में बाधक मानते हुए तिरस्कार किया जाता है जोकि ठीक नहीं है और माता पिता के ज्ञान और अनुभव के लाभ से वंचित रहकर जीवन पथ में अज्ञानतावश त्रुटियां करते हुए परेशानियां और कष्ट उठाते हैं। अतः प्राचीन संस्कृति और संस्कार को अपनाया जाना जीवन को सुखमय बनाने के सौपान हैं।

तिथि पर्व, त्यौहार पर अन्न वस्त्र का दान

हमारे देश की संस्कृति में दान देने की परंपरा रही है जिसमें कि तीर्थ प्रवास के दौरान अथवा अपने घर में रहते हुए किसी पर्व त्यौहार पर अन्न, फल एवं वस्त्र का दान करने की परंपरा है। इससे एक तो किसी आवश्यकता प्रधान व्यक्ति को उसकी आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है तथा किसी भी प्रकार के अन्न, वस्त्र का दान किसी ग्रह विशेष का माना जाता है जिससे कि उस ग्रह की शांति अपने आप हो जाती है तथा जीवन पथ की कठिनाइयां दान के कारण ग्रहों के शुभत्व के कारण सरलता पूर्वक हल होने लगती है।





अर्चना गुप्ता, जमशेदपुर

यह तो हम सभी जानते हैं की पूर्व जन्म के कर्मों को भोगने के लिए ही हमारा जन्म हुआ है। इसका ज्योतिष की दृष्टि से हम आकलन करें तो इनमें ग्रहों नक्षत्रों की महती भूमिका प्रतीत होती है पूर्व कर्म हमारे सकारात्मक रहे हैं तो इस जन्म में भी वह सकारात्मक फल हो सकते हैं यदि जन्म कुंडली राजयोग कारक है तो समझ ले कि पूर्व जन्म में अच्छे कर्म किए होंगे और यदि कुंडली में अच्छे योग नहीं हैं तो यह भी हमारे पूर्व जन्म के नकारात्मक कर्मों का फल है। इसे हम कुंडली के पंचम भाव और उसके स्वामी से देखते हैं और वक्री ग्रहों से देखते हैं विशेष कर यदि पंचमेश वक्री हो जाए तो यह पूर्व जन्मों के कई कई जन्मों के अधूरे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए हमारा जन्म हुआ है ऐसा विचार किया जाता है।

जो ग्रह वक्री हो उसी के अनुसार पूर्व जन्म के अधूरे कर्मों का विचार किया जाता है।

सूर्य चंद्र कभी वक्री नहीं होते लेकिन वक्री ग्रहों के साथ होने पर वक्री जैसा फल देते हैं जिसे माता-पिता के सुख में कमी आ सकती है।

मंगल के वक्री होने पर अनुमान किया जाता है कि पिछले जन्म में जातक में कोई दुस्साहस भरा कार्य किया होगा। अपने साहस के द्वारा किसी का कार्य बिगाड़ा होगा ..जिससे इसजन्म में उसे वक्री मंगल मिला जिसकी वजह से उसमें उग्रता आवेश की मात्रा अधिक रहेगी और वह किसी कार्य को अपनी नकारात्मक अग्रेशन के कारण बिगाड़ लेगा।

इसी प्रकार बुध के वक्री होने पर जातक ने पूर्व जन्म में अपनी छोटी बहन अथवा छोटे-छोटे बच्चों के साथ कुछ गलत कर्म किया होगा, ज्ञान का दुरुपयोग किया होगा जिससे इस जन्म

पूर्व संचित कर्म ही भविष्य निर्धारण में सहयोगी



में वक्री बुध उसकी जन्म पत्रिका में स्थित हुए और इसी कारण बुध से संबंधित फलों में कमी आएगी।

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के लिए ..

शुक्र वक्री होने पर स्त्रियों से संबंधित अनाचार।

गुरु के वक्री होने पर ब्राह्मणों वयोवृद्धों का अपमान, गुरुओं से दुर्व्यवहार।

शनि के वक्री होने पर पीपल का पेड़ कटवा देना, श्रमिकों तथा अपने अधीनस्थ कार्य करने वालों के साथ अन्याय तथा अत्याचार की भावना..ऐसा अनुभव द्वारा ज्ञात किया जासता है।

जन्म कुंडली में जो ग्रह वक्री हैं उनसे संबंधित जीव के सुख में हानि करते हैं।

वक्री ग्रह हमेशा अपने कारकत्व में कमी करते हैं।

वक्री ग्रह जिस भाव के स्वामी है उस भाव से संबंधित कर्मों का अधूरा लेखा-जोखा इस जन्म में पूरा करने आए हैं

लेकिन यदि उस ग्रह की दृष्टि अपने भाव पर पड़ जाती है तो उस लक्ष्य को इस जन्म में पूरा कर पाते हैं अन्यथा नहीं।

इस बात को एक उदाहरण से कहना चाहूंगी जैसे तुला लग्न की पत्रिका में चतुर्थ और पंचम भाव के स्वामी शनि वक्री होकर अष्टम भाव में बैठे तो जातक चतुर्थ माता और पंचम संतान के प्रति कुछ अधूरे लेन देन लेकर इस जन्म में आया है लेकिन अष्टम भाव में बैठकर पंचम पर दृष्टि देने के कारण इस जन्म में संतान के प्रति अपना कर्तव्य निभाने में सफल हो पाएगा परंतु माता के प्रति अपना कर्तव्य निभाने में सफल नहीं हो पाएगा।

अतः जातक को विशेष रूप से इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए और उनसे संबंधित जीवों का विशेष तौर पर आदर करना चाहिए जिससे वक्री ग्रहों की नकारात्मकता कम होगी और पूर्व जन्म के फलों को भोगने में सकारात्मक सफलता मिलेगी।





कोरोना महामारी ज्योतिषीय विवेचन

ज्योतिषचार्य मौली दुबे, लन्दन

वर्ष 2020 का आगमन होते ही विश्व में कई प्रकार की विपदाएं जनसमूह पर हावी हुयी। प्राकृतिक आपदाओं के अतिरिक्त कोरोना वाइरस ने भी पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया। विश्व स्वस्थ संघटन ने इसे महामारी घोषित कर दिया. शेयर मार्किट की हालत ख़राब कर दी। विश्व पटल पर इसका ख़ौफ हर किसी के चेहरे पर साफ़ नज़र आ रहा है। आइये ज्योतिष के नज़रिये से इसे समझने की कोशिश करें। न्याय के देवता तथा यम के भ्राता शनि इस समय मकर राशि पर भ्रमण कर रहे हैं जो कि उनकी स्वयं की राशि है। शनि इस समय उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जो की सूर्य का नक्षत्र है में गोचर कर रहे हैं जो 3 जनवरी 2020 से 21 जनवरी 2021 तक रहेंगे। शनि का सूर्य के नक्षत्र में गोचर जन धन हानि का सूचक है।

**शनि वक्र जने पीड़ा -
गुरु वक्रे स्थिरो रोगो।
शनिवक्रे महामारी
रौरवं च भयं पथि ॥**

11 मई 2020 से 29 सितम्बर 2020 तक शनि वक्रीय रहेगा , 14 मई 2020 से 12 सितम्बर 2020 तक गुरु वक्रीय रहेगा 13 मई 2020 से 25 जून 2020 तक शुक्र वक्रीय रहा यह स्पष्ट हैही।, 18 जून 2020 से 12 जुलाई 2020 तक बुध वक्रीय रहेगा 9 सितम्बर 2020 से 13 नवम्बर 2020 तक मंगल वक्रीय रहेगा। अर्थात पाप ग्रह के वक्रीय रहने



के समय आपदा की माहौल बनने अर्थात वृद्धि की सम्भावना है। शुक्र को कफ प्रधान तथा वात दोष से युक्त जल तत्व ग्रह माना गया है। शुक्र ग्रह 20 जुलाई को मार्गी होंगे जो कोरोना वायरस में राहत का कार्य करेंगे। शनि तथा गुरु सितम्बर में मार्गी होंगे जो धीरे धीरे इस महामारी को कम करेंगे। इस महामारी से निजाद जनवरी 2021 तक मिलनेकी सम्भावना रहेगी।

अगर इस वर्ष के पंचांग पर नजर डालें तो निर्णय सागर पंचांग से गणनानुसार वर्ष लग्न प्रवेश कर्क राशि तथा वर्षेश लग्न प्रवेश तुला राशि में है तथा इन लग्नपतियों का स्थान वर्ष कुंडली में नवम तथा वर्षेश कुंडली में अष्टम भाव में है। अतः स्वास्थ्य विषयक दृष्टि से प्रभावित रहेगा महामारी से जनहानि की सम्भावना बनेगी।

विक्रम वर्ष श्री आनंद तथा श्री राक्षस नामकीय गणना से प्रभावित है। इस वर्ष के राजा मंगल तथा सहयोगी नायक बुध ग्रह है। सहिंता सूत्रानुसार जनमानस संक्रामक रोग आदि से पीड़ित

रहेगा। आगामी संवत्सर राक्षस नाम का रहेगा जो जनमानस के लिए विपदा भरा रहेगा। सभी गणनाओं का विचार करते हुए ऐसा कहा जा सकता है जुलाई 2022 तक हम इस आपदा पर पूरी तरह से काबू पा लेंगे।

जन मानस को तुलसी का सेवन करना चाहिए। हल्दी का उपयोग करना चाहिए। हनुमान जी के सिंदूर को माथे , कान एवं गले पर लगाना चाहिए . हल्दी में चुना मिलकर नीबू मिलकर अपनी सिर पर लगाना चाहिए। राम रक्षा स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। यथा संभव दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।

संत कवि तुलसीदास जीद्वारा रचित रामचरित मानस में रामराज्य का वर्णन करते हुए श्री राम जी कृपा से रोग से मुक्ति पाने का अमोघ मंत्र है :-

दैहिक दैविक भौतिक तापा।

रामराज नहिं काहु हि ब्यापा ॥

श्री राम चंद्र जी के शासन काल में, सभी प्रजाजन पूर्णतः स्वस्थ एवं सुखी थे।

यह उक्त चौपाई से स्पष्ट हो रहा है ,सुख शांति के लिए इसका पाठ करना लाभदायी है।





ज्योतिष से विज्ञान का क्या है सम्बन्ध

जबलपुर। विश्वविद्यालय व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास संस्थान रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, म.प्र. द्वारा “दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार” ज्योतिषास्तु एवं कोविड-19 “कोविड-19 से बचाव में वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र की भूमिका” का आयोजन दिनांक 10 एवं 11 जुलाई 2020 को किया जा रहा है। इस संदर्भ में आज दिनांक 11 जुलाई को समय 12.05 बजे से 3.00 बजे तक गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन इसका तकनीकी सत्र एवं समापन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें आज लब्धप्रतिष्ठित देश के ख्यातिप्राप्त ज्योतिषाचार्यों के उद्गारों को समावेशित किया गया।

तकनीकी सत्र

1. डॉ. निलिम्ब त्रिपाठी, आचार्य, भारतीय भाषा विभाग, महर्षि महेश योगी वैदिक वि.वि. भोपाल, म.प्र. ने

» दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार के दूसरे दिन ज्योतिष के प्रकांड विद्वान हुए शामिल

वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में अपना व्याख्यान दिया।

2. ज्योतिषाचार्य प्रो. गिरिजा शंकर शास्त्री, आचार्य, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र. ने अपने तकनीकी सत्र में ज्योतिष और ग्रहदशा के संबंध में सविस्तार चर्चा की।

3. प्रो. विनय कुमार पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू वि.वि., वाराणसी, उ.प्र. ने कोरोना पर ज्योतिषशास्त्र का प्रभाव के संबंध में व्याख्यान दिये।

4. ज्योतिषविद्, श्रीमति संगीता शर्मा, आज तक न्यूज चैनल ने ज्योतिष का स्वास्थ्य से संबंध को सभी प्रतिभागियों को सविस्तार समझाया।

5. डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय, सम्पादक, जीवन वैभव ज्योतिष पत्रिका ने चंद्र एवं सूर्य के व्यावहारिक कार्य से ज्ञानवर्धन किया, एवं कहा कि वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र भारतीय परंपरा के वाहक हैं, इनके प्रयोग से समस्याओं के सटीक समाधान निश्चित रूप से प्राप्त किये जा सकते हैं।

6. प्रो. सुरेंद्र सिंह, त्रिकाल ज्योतिष अनुसंधान केंद्र, एवं संयोजक, निदेशक, विश्वविद्यालय व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास संस्थान ने ज्योतिष एक विज्ञान विषय को संबोधित किया।

7. ज्योतिषाचार्य, श्रीमति पूर्णिमा पाण्डेय, जबलपुर, म.प्र. ने कोरोना में





जीवन वैभव

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक परीक्षा

शानि देव से संबंध, प्रभाव, एवं उपाय विषय को संबोधित किया।

समापन सत्र

अध्यक्षता- मा.प्रो कपिल देव मिश्र, कुलपति, रा.दु.वि.वि.- अध्यक्षता करते हुए ने अपने अध्यक्षीय उद्घोषण में कहा कि, भारतीय संस्कृति में ही सभी समस्याओं के समाधान समाहित होते हैं। वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र की पृष्ठभूमि वैश्विक क्षितिज पर सार्वभौमिक रूप से सर्वविदित है जिसका पूर्णतः वैज्ञानिक आधार है।

मुख्य अतिथि - प्रो.श्रेयांश द्विवेदी, कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत वि.वि. कैथल, हरियाणा ने अपने उद्घोषण में कहा कि, वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र के व्यावहारिक प्रयोग को अपनाने की आवश्यकता है। कर्तव्यपरायणता को सर्वव्यापी होना होगा।

विशिष्ट अतिथि- डॉ दीपेश मिश्रा, कुलसचिव, रा.दु.वि.वि रहे।

सारस्वत् अतिथि- प्रो. प्रज्ञा मिश्रा, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्व-विद्यालय, सतना, म.प्र. ने अपने उद्घोषण में दरिद्रनारायणों की सेवा, आरक्षित को रक्षित, स्वार्थ को परमार्थ, की ओर ले जाने की आवश्यकता है। एवं कर्म एवं सौंदर्य के प्रयोगों को बताया।

सारांशीय उद्घोषण - प्रो. सुरेंद्र सिंह, संयोजक ने दिया।

धन्यवाद ज्ञापन- डॉ अजय मिश्रा, कौशल विकास विभाग, रा.दु.वि.वि.

कार्यक्रम संचालन- डॉ मीनल दुबे, कौशल विकास विभाग, रा.दु.वि.वि.



आज के कार्यक्रम में प्रो. विनय कुमार पाण्डे जी, डॉ हेमचंद्र पाण्डे जी, डॉ रंजना पाण्डे, डॉ चित्रा मिश्रा, डॉ निलिम्ब त्रिपाठी जी, विश्वविद्यालय इं. महावीर त्रिपाठी, अमरकांत चौधरी, के प्रो, लोकेश श्रीवास्तव सर, प्रो. सुनील, आदि अनेक प्रतिभागीजनों ने रीता भंडारी, प्रो. अलका पाण्डे, विभाग सहभागिता की।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श

ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए



डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल

फोन : 0755-2418908, मो.: 9425008662

समय प्रातः 9:30 बजे से 11:30 बजे तक

ईमेल : hcp2002@gmail.com

**परामर्श के लिए
पूर्व समय लेना आवश्यक :**



32

जुलाई से सितंबर 2020



ह

ज्योतिष शास्त्र के अंतरगत ग्रहों नक्षत्रों का अथर्ववेद में वर्णन आया है।

शन्नो ग्रहाश्चन्द्रमसां

शमादित्यश्च राहुणा

शन्नो मृत्युर्धूमकेतुः शं

रुद्रास्तिग्मतेजसः॥

अर्थात् हे ईश्वर चन्द्र और उससे सम्बन्धित समस्त ग्रह हमारे लिए कल्याण कारी हो राहु सूर्य मृत्यु का आधिष्ठाता शनिग्रह और धुमकेतु तथा इसी प्रकार प्रखर तेजवाले अन्य रुद्रगण भी हमारे लिए कल्याण कारक हो, स्पष्ट है कि इन ग्रहों के शुभ प्रभाव हेतु प्राचीन काल से ही वेदों में भी परमात्मा से प्रार्थना की गई है। उसी प्रकार उसी काण्ड के 7वें सूक्त में नक्षत्रों का वर्णन इस प्रकार किया गया है:-

सुहवमग्ने कृतिका रोहिणी

चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा।

पुनर्वसु सुनृता चारु पुष्यो

भानुराश्लेषा अयंन मघा मे ॥

अर्थ हे कि व्यापक परमात्मा कृतिकाएं और रोहिणी सुख से बुलाने योग्य हों। पुनर्वसु और प्रकाशमान पुष्य सुन्दर चेष्टा के साथ अनुकूल हो, आशय है कि नक्षत्रों और तारागणों का परस्पर सम्बन्ध और चन्द्रमा आदि ग्रहों के साथ संसर्ग प्रकृति वायु जल आदि पर उनकी गति का प्रभाव को परमात्मा की अनन्त शक्ति का विचरण करके सामर्थवान बनावें।

वेदों के कुछ सूक्त में नक्षत्रों के फल और उनकी तारा शृंखलाओं के साथ मिलकर पृथक पृथक आकृति का वर्णन भी वेद की ऋकाओं में मिलता है, जिनका के प्रतिदिन ऋषि मुनियों द्वारा रचना के उपरांत पठन पाठन का उल्लेख है। जोकि ज्योतिष और

हमारा दिशा दर्शक फलित ज्योतिष



अध्यात्म का सदैव साथ निरूपित करता है।

ज्योतिष शास्त्र वेदांग है, इसके प्रणेता ऋषि मुनियों ने अपनी अध्यात्मिक शक्ति से ही ग्रहों की पृथ्वी की दूरी का परिनापन किया है। जो आज का वैज्ञानिक युग अपने यंत्रों के माध्यम से कर रहा है। ज्योतिष शास्त्र को मूल रूप से ब्रह्माजी ने अपने मानस पुत्र नारद जी को ज्ञान दिया। बादमें इसे शौनकादि ऋषियों ने प्राप्त किया। शौनकादि ऋषियों द्वारा इस ज्ञान को गर्ग मुनि ने प्राप्त किया तत्पश्चात गर्ग मुनि से यह ज्ञान महर्षि पाराशर ने प्राप्त किया। कश्यप संहिता अनुसार यह ज्ञान ब्रह्मा से प्रारंभ होकर 18 ऋषियों द्वारा समाज हित में प्रचलन में दिया है जिसमें महर्षि व्यास, पाराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मनु, अंगिरा, च्यवन, पौलिश, भृगु तथा शौनक मुख्यतः हैं।

इनके द्वारा ज्योतिष के तीन स्कन्ध अर्थात् विभाग बताए गए हैं,

कालगणना, ग्रहगोचर, ग्रहगति आदि गणित की प्रक्रिया को सिद्धांत ज्योतिष कहा गया है। गोचरवश भूलोक, आकाश लोक और संसार के जीवों पर होने वाला प्रभाव के ज्ञान की समीक्षा करने को संहिता ज्योतिष कहा गया है।

जन्मपत्र, प्रश्न चक्र, वर्षफल आदि के गणना को होरा अंतर्गत माना जाता है जो कि फलादेश का कार्य होता है। कहने का अर्थ है कि अपने आत्म ज्ञान के माध्यम से उस शास्त्र की रचना अध्यात्म

वादी संतों के माध्यम द्वारा हुई है इसकारण ज्योतिष के ये तीनों भाग बिना अध्यात्म के पूर्ण नहीं होसकते। ज्योतिष को विज्ञान कह सकते हैं जिसमें कि गणित समाहित है लेकिन होरा अर्थात् फलित के लिए अध्यात्म आवश्यक है।

ज्योति + इश = ज्योतिष ।

स्पष्ट है कि अध्यात्म की शक्ति के बीना फलित भाग पूर्ण नहीं होसकता ।





ग्रहों नक्षत्रों का तेजी मंदी पर प्रभाव



1. पूर्णिमा या अमावस्या के बाद पहले से चली आ रही तेजी में मंदी अथवा मंदी हो तो तेजी आती है।
2. चंद्र बुध एवं चंद्र शुक्र युति अमावस्या के दो से चार दिन में आती है तो तेजी और मंदी आती है मंगल राहु साथ हो तो भी चांदी (लाल वस्तु तेज)।
3. यदि बुध या शुक्र सूर्य के पीछे हो अमावस्या के पहले युती है तो अमावस्या बाद तेजी।
4. बुध सूर्य से 28 डिग्री पीछे या आगे जाते हैं इस प्रकार शुक्र सूर्य से 48 अंश आगे या पीछे जा सकता है। बुध और शुक्र आपस में $48+28=76$ अंश तक दूरी होने पर वर्षा कम होती है। ऐसे में चांदी, चना, तेलो, दलहन तथा धनिया में तेजी आती है।
5. बुध शुक्र एक साथ दो-तीन महीनों तक नजदीक रहे या आपस में 5 डिग्री दूरी पर हो तब नजदीक मानते हैं। ऐसे में बारिश अच्छी होती है और तेलवाना तेल और आईल सीड में मंदी आ जाती है।
6. गुरु ग्रह जब कुंभ राशि में हो तब तेलवाना में तेजी देता है, यह तेजी अमावस्या पूर्णिमा के निकट अधिक हो जाती हैं।
7. गुरु ग्रह मकर, मेष, सिंह के 15 अंश के बाद से कन्या तक, लहसुन में मंदी आती है। गुरु कन्या, वृषभ के राहु या तुला राशि में एक साथ होने पर भी लहसन में तेजी और प्याज में तेजी।
8. जब गुरु शनि वृषभ के हो, तब तेल, करंज के बीज सोयाबीन में तेजी चल सकती है।
9. सिंह, मीन, वृश्चिक में मंगल शेरर मार्केट में मंदी।
10. वृषभ का, मीन का मंगल मार्केट को तेजी मंदी ज्यादा।
11. शुक्र, शनि एक साथ होकर अस्त हो तो मंदी होकर तेजी।
12. गुरु ग्रह वक्री होने पर सोने-चांदी में तेजी।
13. मंगल शनि गुरु में से मंगल अस्त होने से तेजी। मंगल अस्त होने पर मूंगफली, तेल, चना तेज।
14. गुरु ग्रह अस्त होने पर तेल, दाल, लहसुन में तेजी।
15. शुक्र ग्रह अस्त होने पर शेरर मार्केट में मंदी।
16. सोमवारी या मंगलवारी पूर्णिमा होने पर सोयाबीन डी.ओ.सी.तेज।
17. सिंह का मंगल वृश्चिक एवं मीन राशि का मंगल सिंह/मीन का शुक्र, वृश्चिक का शुक्र, अश्लेषा, रेवती कक्ष शुक्र तथा मूल/उत्तराषाढा का चंद्र (कृष्णपक्ष का) हो तो बाजार में भयंकर गिरावट आती है।
18. कृष्ण पक्ष में शुक्र, धनेष्ठा, शतभिषा तथा चंद्रमा चित्र स्वाती से पूर्वाषाढा तक होने पर भयंकर मंदी आती है।
19. कृतिका से अश्लेषा के चंद्र नक्षत्र मंदी देते हैं।





त्रैमासिक राशि भविष्य फल जुलाई से सितंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय

पं. विनोद जोशी

पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ	वृषभ ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो	मिथुन का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा
<p>जुलाई 2020</p> <p>इस मास के प्रारंभिक 2 सप्ताह समस्या पर रहेंगे व्यर्थ की चिंताएं तथा समय पर कार्यों में अवरोध आएगा तीसरा एवं चौथा सप्ताह कार्यों में कुछ गति देगा पारिवारिक चिंताएं अवश्य रहेगी। व्यापारी वर्ग तथा कृषक वर्ग को समय सामान्य रहेगा। कर्मचारी वर्ग तथा विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>आपके राशि में दो सप्ताह का समय अपनी प्रतिष्ठा तथा पराक्रम को बढ़ाने का है। परन्तु इसके लिए अनावश्यक शत्रुता रह सकती है। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में अपने कार्यों के प्रति सजगता रखें अन्यथा नुकसान होना संभव है। व्यापारी तथा कृषक वर्ग को समय कमजोर कर्मचारी वर्ग को समय पर लाभ विद्यार्थी वर्ग के लिए मास उत्तम रहेगा।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>इस मास में आपके लिए कई चुनौतियां सामने आएंगी। आरंभिक 2 सप्ताह शांति एवं सावधानी रखें अनावश्यक विरोध से बचें। तीसरा एवं चौथा सप्ताह कार्यों में अनुकूलतादायक है तथा समय पर लाभ प्राप्ति होगी। व्यापारी वर्ग को तथा कृषक वर्ग को समुचित लाभ कर्मचारी को तनाव एवं चिंता तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूल है।</p>
<p>अगस्त 2020</p> <p>मास का प्रारंभ अशुभ है आपके ऊपर व्यर्थ के आरोप ना लगे इसका ध्यान रखें। भाई बंधुओं से वैचारिक विषमता रह सकती है। मास का तीसरा एवं चौथा सप्ताह सामान्य रहेगा मानसिक अशांति बनी रहेगी। व्यर्थ के विवाद से दूर रहने का प्रयास करें। व्यापारी वर्ग के लिए हानिकारक। कृषक वर्ग के लिए व्यर्थ दौड़-धूप। कर्मचारियों के लिए चिंताजनक तथा विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>यह मास आपके लिए कठिनाइयों को दूर करने वाला तथा पारिवारिक दृष्टि से शुभ है। संतान की चिंताओं की कमी होगी। राजकीय कार्यों में सफलता। मास के अंतिम 2 सप्ताह भ्रमण कारक तथा अनावश्यक चिंता दूर होकर प्रसन्नता दायक रहेगा। व्यापारी वर्ग के लिए समय। उत्तम कृषक वर्ग के लिए मेहनत का फल उत्तम। कर्मचारी वर्ग के लिए संतोषप्रद तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूल है।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>इस माह में आपको अपनी आवश्यकताओं को कम करना चाहिए, शारीरिक पीड़ा पेट दर्द संबंधी विकार अथवा मानसिक परेशानी रह सकती है। तीसरे एवं चौथे सप्ताह में आपको मित्रों और परिजनों से सहयोग मिलेगा। पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। अपने कार्यों में यश प्राप्त होगा। व्यापारी वर्ग के लिए संतोष पर प्रद। कृषक वर्ग को अधिक खर्चीला समय। कर्मचारी वर्ग को भ्रमण अधिक। विद्यार्थी वर्ग को व्यर्थ चिंताएं रहेगी।</p>
<p>सितंबर 2020</p> <p>यह मास आपके स्वास्थ्य के लिए सामान्य है। पारिवारिक सदस्यों से अकारण असंतोष ना हो इसका ध्यान रखें। संतान पक्ष की तरफ से संतोष रहेगा। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में आर्थिक परेशानियां रह सकती है व्यय अधिक होगा व्यापारिक वर्ग को सफलता और लाभ। कृषक वर्ग में अधिक यत्न से लाभ। कर्मचारी एवं विद्यार्थी वर्ग के लिए मास सामान्य है।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>आपकी राशि में इस माह में रोग तथा अकारण संताप रह सकता है कार्य में रुकावट तथा वाहन सुख में दिक्कतें रह सकती है। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में मिश्रित फल रहेगा। राजकीय कार्यों में व्यवधान रह सकता है, यात्रा में सावधानी बरतें। व्यापारी वर्ग के लिए लाभ में कमी। कृषक वर्ग के लिए अधिक खर्चीला समय। कर्मचारी वर्ग के लिए यह माह अनुकूल है। विद्यार्थी वर्ग को अपने प्रयास अधिक करने होंगे।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>आपकी राशि के लिए यह माह अनुकूल फल देने वाला है। कार्यों में लाभ तथा सफलता प्राप्त होगी। स्थाई संपत्ति के बारे में प्रयास करना लाभप्रद है। मास का तीसरा एवं चौथा सप्ताह में पद प्राप्ति, स्थान परिवर्तन अथवा मन वांछित कार्य संपादित होगा। व्यापारी वर्ग के लिए समय उत्तम। कृषक वर्ग के लिए अपने कार्य का यश मिलेगा। कर्मचारी वर्ग तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए अधिक व्यस्तता पूर्ण समय रहेगा।</p>





त्रैमासिक राशि भविष्य फल

जुलाई से सितंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय

पं. विनोद जोशी

पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो	सिंह मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे, टो	कन्या टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो
<p>जुलाई 2020</p> <p>आपको समय पर लाभ एवं कार्यों की सराहना होगी। प्रारंभ के दो सप्ताह आपके लिए अनुकूल हैं। पारिवारिक कार्यों में भी व्यस्तता रहेगी। तीसरा एवं चौथा सप्ताह आपको किसी चुनौती भरा कार्य को पूर्ण करने वाला होगा। व्यापारी वर्ग को लाभप्रद समय, कृषक वर्ग के लिए कठिनाइयां, कर्मचारी एवं विद्यार्थी वर्ग के लिए समय व्यस्तता एवं परेशानी का है।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>यह मास आपके अपने कार्यों के लिए अनुकूल है। कई दिनों के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे लेकिन अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। मास का तीसरा एवं चौथा सप्ताह व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च कारक है, सावधानी रखना चाहिए। व्यापारी वर्ग के लिए अनुकूल। कृषक वर्ग के लिए खर्च कर कारक कर्मचारी वर्ग के लिए व्यस्तता पूर्ण तथा विद्यार्थी वर्ग का समय अनुकूल है।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>आपको स्वास्थ्य की दृष्टि से पहले 2 सप्ताह सावधानी रखना चाहिए। अच्छा होगा कि आप अनावश्यक तनाव से दूर रहकर स्वास्थ्य एवं पारिवारिक कार्यों का निपटारा करें। मास के अंतिम 2 सप्ताह में पुराने मित्रों से विवाद ना हो इसका ध्यान रखना चाहिए। व्यर्थ खर्च संभव है व्यापारी वर्ग के लिए धन लाभ प्रद। कृषक वर्ग के लिए खर्च कारक। कर्मचारी वर्ग के लिए अनुकूल तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सामान्य है।</p>
<p>अगस्त 2020</p> <p>मास का पूर्वार्ध आपके लिए रुके हुए काम पूरे करेगा करेगा साथ ही व्यापार-व्यवसाय में सावधानी बरतना चाहिए। पारिवारिक चिंताएं रहेगी पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें मास के उत्तरार्ध में आपको अपने कार्यों को उत्तम तरीके से करने के अवसर प्राप्त होंगे। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा व्यापारी वर्ग को उचित लाभ कृषक वर्ग को चिंताएं तथा विद्यार्थी वर्ग को सफलताएं प्राप्त होगी नौकरी करने वालों को सावधानी से कार्य करने की सलाह है। मास की 2,3, 6, 8, 10, 12, 13, 21, 22 एवं 30 तारीख के शुभ हैं।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>इस माह अपने कार्य को सजगता से करना चाहिए। कार्यों का विस्तार अपनी क्षमता के अनुरूप ही करना चाहिए। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें अनावश्यक भ्रमण ना करें। व्यापारी वर्ग को समय। अनुकूल कृषक वर्ग को खर्च कारक समय। कर्मचारी वर्ग को सावधानी पूर्वक कार्य करना चाहिए। विद्यार्थी वर्ग का समय कमजोर है।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>इस मास में अनावश्यक चिंताएं रहेगी। स्वजनों से तनाव तथा रुके हुए कार्य में भी अवरोध आ सकता है। तीसरे एवं चौथे सप्ताह में अनुकूलता रहेगी। राजकीय रुके हुए कार्य भी पूर्ण होंगे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को सफलता दायक। कर्मचारी वर्ग को सुखद परिवर्तन तथा विद्यार्थी वर्ग को स्वेच्छा अनुसार सफलता।</p>
<p>सितंबर 2020</p> <p>अपने कार्यों में स्थिरता प्राप्त होगी। धन का आगमन होगा। श्रेष्ठ जनों से सन्मान प्राप्त होगा। मास के दूसरे एवं चतुर्थ सप्ताह में स्थित स्थाई कार्यों के लिए खर्च तथा पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। व्यापारी वर्ग को संतुष्टि कृषक वर्ग को उत्तम द्रव्य लाभ। कर्मचारी वर्ग को भ्रमण एवं परिवर्तन तथा विद्यार्थी वर्ग को संतोष समय।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>यह मास आपके लिए आर्थिक कठिनाइयों से परिपूर्ण है पारिवारिक दृष्टि से सुख प्राप्त होगा। अपने कार्यों में सजगता से व्यवधान नहीं आ पाएगा। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में परिस्थितियां सुधरेगी। रुका हुआ पैसा प्राप्त होगा। भ्रमण में सावधानी रखे। व्यापारी वर्ग के लिए उत्तम समय। कृषक वर्ग के लिए समय पर लाभ। कर्मचारी वर्ग के लिए समय सामान्य है। विद्यार्थी वर्ग को अधिक यत्न से सफलता प्राप्त होगी।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>मास में शुभ कार्यों की संभावना है, मित्रों तथा परिवार के सदस्यों से सहयोग मिलेगा। मन में प्रसन्नता रहेगी आर्थिक कठिनाइयां दूर होंगी। तीसरे एवं चौथे सप्ताह में लाभदायक योजनाएं बनेगी और उसमें सफलता भी प्राप्त हो होगी। व्यापारी वर्ग के लिए समय शुभ है। कृषक वर्ग अपने कार्य से संतुष्टी रहेगी। कर्मचारी वर्ग को कार्य से यश मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग को मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।</p>



त्रैमासिक राशि भविष्य फल जुलाई से सितंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय

पं. विनोद जोशी

पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते	वृश्चिक तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू	धनु ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भ
<p>जुलाई 2020</p> <p>आपकी राशि पर इसमाह के आरंभिक दोसप्ताह धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में व्यस्तता पूर्ण रहेगा। आर्थिक खर्च अधिक। अंतिम दो सप्ताह खर्च कारक, धन लाभ में कमी तथा व्यर्थ भ्रमण कारक रहेगा। कर्मचारी वर्ग को व्यस्तता, कृषक को समुचित लाभ। व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभ। विद्यार्थी के लिए कमजोर समय है।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>आपकी राशि के लिए प्रारंभ के 2 सप्ताह स्वास्थ्य की दृष्टि से कमजोर है अधिक सजगता बरते पारिवारिक कार्यों में व्यय होगा। तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह आपके लिए अनुकूल रहेगा। आर्थिक लाभ भी समय पर होगा व्यापारी वर्ग को समय उत्तम कृषक वर्ग को कमजोर कर्मचारी वर्ग को अधिक व्यस्तता तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय सामान्य है।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>आपकी राशि के लिए समय मिश्रित रहेगा आर्थिक लाभ होगा लेकिन अनावश्यक कार्यों में खर्च होगा। दूसरा सप्ताह सामान्य है जिसमें अपने कार्य में बाधाएं उपस्थित होंगी। मास के अंतिम 2 सप्ताह आपके कार्यों के लिए अधिक भ्रमण कारक तथा खर्च ले रहेंगे। पारिवारिक चिंताएं रहेगी व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को सामान्य कर्मचारी वर्ग को अधिक य करना पड़ेगा विद्यार्थी वर्ग को माह अनुकूल रहेगा।</p>
<p>अगस्त 2020</p> <p>इस मास में आपको संतान का चिंता कम होगी। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा अपने कारोबार में सफलता प्राप्त होगी। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में उच्च वर्ग के लोगों से संबंध बनेंगे। सहयोग मिलेगा तथा मान सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग को इच्छित लाभ। कृषक वर्ग को कार्य से संतोष। कर्मचारी वर्ग को प्रशंसा तथा विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य में सफलता प्राप्त होगी।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>मास के प्रथम 2 सप्ताह शुभ नहीं है। अपने कार्यों का समुचित लाभ नहीं मिल सकेगा प्राप्त होने वाले अवसर का मूल्यांकन नहीं कर पाएंगे। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में अपनी प्रतिष्ठा और वांछित लाभ प्राप्त हो सकेगा। संतान की चिंता दूर होगी। कर्म पक्ष का शुभ समाचार प्राप्त होगा। व्यापारी वर्ग को सामान्य। कृषक वर्ग को अपने अधिक य से लाभ। कर्मचारी वर्ग को कठिनाइयों का सामना करना होगा। विद्यार्थी वर्ग का समय सामान्य।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>मास के अंतर्गत अपने नियमित कार्य में अवरोध संभव है। स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है अनावश्यक विवाद से दूर रहे। मास के तीसरे एवं चतुर्थ सप्ताह में सामान्य स्थिति रहेगी। श्रेष्ठ लोगों से अच्छे संबंध बनेंगे तथा कार्यों में भी प्रगति होगी। व्यापारी वर्ग को समय शुभ कृषक वर्ग को उत्तम समय। कर्मचारी वर्ग को व्यस्तता अधिक। विद्यार्थी वर्ग को मानसिक तनाव रहेगा।</p>
<p>सितंबर 2020</p> <p>इस मास में पारिवारिक सुख की वृद्धि होगी विघ्न बाधाओं का निवारण होगा। अपने कारोबार में वांछित वृद्धि होगी मास के तीसरे और चौथे सप्ताह में वांछित सफलता में थोड़ी कमी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ किसान वर्ग को कठिनाइयां नौकरी वर्ग को समय पर लाभ तथा विद्यार्थी वर्ग को अधिक यात्रियों से लाभ मिल सकता है।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>यह मास सुख शांति वर्धक। अपने कार्यों में यथासंभव लाभ। किसी नवीन योजना का प्रयास सफलता देगा। मास के तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह में पुराने रुके हुए काम पूर्ण होंगे। किसी पुराने कार्य को पूर्ण होने की सूचना मिलेगी। व्यापारी वर्ग को समय कमजोर। कृषक वर्ग को व्यस्तता पूर्ण, कर्मचारी वर्ग को मास उत्तम, विद्यार्थी वर्ग को परिवर्तन दायक समय रहेगा।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>मास के प्रथम दो सप्ताह दो पक्ष सम्मान की वृद्धि इष्ट मित्रों तथा पारिवारिक परिजनों की तरफ से संतुष्टि रहेगी। तीसरा एवं चतुर्थ सप्ताह में किसी विवाद के कारण व्यर्थ समय व्यतीत होगा। शांति से इसका निदान करें। व्यापारी वर्ग को समय सामान्य, कृषक वर्ग को अनुकूलता, कर्मचारी वर्ग को व्यस्त था एवं आर्थिक कष्ट, विद्यार्थी वर्ग को संतुष्टि प्रद समय।</p>





त्रैमासिक राशि भविष्य फल

जुलाई से सितंबर 2020

पं. हेमचंद्र पाण्डेय

पं. विनोद जोशी

पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी	कुंभ गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा	मीन दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची
<p>जुलाई 2020</p> <p>इस मास में आपको स्थाई संपत्ति कय करने के प्रयास होंगे, लेकिन सफलता में रुकावट आ सकती है। दूसरा सप्ताह थोड़ा सामान्य रहेगा। मास का तीसरा और चौथा सप्ताह धनलाभ में कुछ सफलता दायक प्रतीत होता है। जिसमें कि कुछ रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यापारी वर्ग को लाभप्रद कृषक वर्ग को सामान्य कर्मचारी वर्ग को अधिक व्यस्तता पूर्ण तथा विद्यार्थी वर्ग को सावधानी से कार्य करना चाहिए।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>किस मास के 2 सप्ताह व्यर्थ तनाव तथा खर्च वृद्धि से परेशानी के रहेंगे किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी अंतिम 2 सप्ताह अनुकूल रहेंगे। अनावश्यक खर्च में कमी आएगी व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल कृषक वर्ग के लिए समय खर्चीला। कर्मचारी वर्ग को समय अनुकूल तथा विद्यार्थी वर्ग को अधिक सावधानी से कार्य करना चाहिए।</p>	<p>जुलाई 2020</p> <p>यह मास आपके लिए सामान्य फल दायक है। अपने किए हुए कार्यों को पुनः करना पड़ सकता है मास का द्वितीय सप्ताह आर्थिक लाभदायक है तीसरा एवं चौथा सप्ताह अपने कार्यों के लिए अनुकूल है स्थायित्व संबंधी कार्य से मन संतुष्ट रहेगा व्यापारी वर्ग को लाभ अच्छा। कृषक वर्ग को अनुकूल समय। कर्मचारी वर्ग को अनावश्यक भ्रमण। तथा विद्यार्थी वर्ग को अपेक्षा अनुरूप सफलता मिलेगी।</p>
<p>अगस्त 2020</p> <p>यह मास सामान्य फलदायक है अपने साहस और आत्म बल के माध्यम से कार्यों में अनुकूलता आ सकती है राज पक्ष में सहयोग। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में विरोधी पक्ष का शमन होगा। तथा अपने कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। व्यर्थ का व्यय ना करें। व्यापारी वर्ग को लाभ नहीं। कृषक वर्ग को अधिक दौड़-धूप से कार्य संपन्न। कर्मचारी वर्ग को समय पर कार्य नहीं होने से तनाव। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य में बदलाव लाना होगा।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>मास के प्रथम 2 सप्ताह स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल शत्रु पक्ष का शमन तथा पुराने इष्ट मित्रों का सहयोग। मास के तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह में अपने कार्य की बाधाओं का निराकरण होगा साथ ही स्थाई संपत्ति के बारे में व्यय हो सकता है व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्य पद्धति में परिवर्तन से लाभ। कर्मचारी वर्ग को संतुष्टि प्रद समय। विद्यार्थी वर्ग को स्वास्थ्य चिंता रहेगी।</p>	<p>अगस्त 2020</p> <p>मास के प्रथम 2 सप्ताह में नवीन योजनाओं के विचार आएंगे, सहयोग भी मिलेगा। संतान पक्ष को अनुकूलता रहेगी मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में समय सामान्य कठिनाइयों का रहेगा। आत्मविश्वास से हल हो सकेगा। यथासंभव यात्रा को टाले। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपनी नई योजना से लाभ। कर्मचारी वर्ग को संतुष्टि। तथा विद्यार्थी वर्ग को शैक्षणिक कार्य में व्यवधान संभव।</p>
<p>सितंबर 2020</p> <p>इस मास में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव करेंगे। पारिवारिक चिंताएं कम होंगी। संतान को स्थायित्व मिलेगा। अंतिम 2 सप्ताह अनावश्यक भागदौड़ के रहेंगे जिसमें आर्थिक खर्च और स्वास्थ्य में बाधाएं रह सकती हैं सतर्कता बरतें। व्यापारी वर्ग को लाभ कम। कृषक वर्ग को आर्थिक लाभ। कर्मचारी वर्ग को यत्न से सफलता। विद्यार्थी वर्ग के लिए सामान्य।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>यह मास शुभ फलदायक है कार्य में अवरोध देने वाले विरोधियों का शमन। संतान की ओर से चिंता रहेगी। तीसरा एवं चौथा सप्ताह में अपने कार्यों में सफलता देगा। सम्मान एवं यज्ञ प्रदान करेगा। कृपया अनावश्यक यात्रा टालें। व्यापारी वर्ग को आर्थिक नुकसान कृषक वर्ग को समुचित लाभ कर्मचारी वर्ग को व्यर्थ भ्रमण विद्यार्थी वर्ग को संतोषप्रद समाज।</p>	<p>सितंबर 2020</p> <p>मास के ग्रहों के मान से अच्छे फल दायक समय नहीं हैं। स्वास्थ्य एवं परिवार की चिंता रह सकती है। मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में अनावश्यक विवाद से बचना चाहिए आर्थिक खर्च अधिक होगा। व्यापारी वर्ग के लिए समय कमजोर। कृषक वर्ग को आर्थिक कष्ट। कर्मचारी वर्ग को कार्य में विलंब के कारण असंतोष। विद्यार्थी वर्ग को व्यर्थ भ्रमण संभव है।</p>



त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त जुलाई से सितंबर 2020

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

जुलाई 2020 के व्रत पर्व

- 1 जुलाई, बुधवार - देवशयनी एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव)
- 2 जुलाई, गुरुवार - चतुर्मास व्रत आरंभ, प्रदोष व्रत
- 3 जुलाई, शुक्रवार - शिवशयनोत्सव
- 4 जुलाई, शनिवार - व्रत की पूर्णिमा, कोकिलाव्रत पूर्णिमा
- 5 जुलाई, रविवार - स्नानदान की पूर्णिमा/व्यास/गुरु पूर्णिमा
- 6 जुलाई, सोमवार - श्रावमास आरंभ, सोमवार व्रत
- 8 जुलाई, बुधवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत
- 10 जुलाई, शुक्रवार - नागपंचमी (बंगाल)
- 12 जुलाई, रविवार - भानुसप्तमी पर्व
- 13 जुलाई, सोमवार - कालाष्टमी/श्रावण सोमवार व्रत
- 16 जुलाई, गुरुवार - कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)
- 18 जुलाई, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत
- 20 जुलाई, सोमवार - स्नानदान श्राद्ध की सोमवती अमावस्या/
श्रावण सोमवार व्रत
- 21 जुलाई, मंगलवार - श्रावण शुक्लपक्ष
- 22 जुलाई, बुधवार - स्वामी करपात्रीजी जयन्ती
- 23 जुलाई, गुरुवार - हरियाली तीज/मधुश्रवा तृतीया पर्व
- 24 जुलाई, शुक्रवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत
- 25 जुलाई, शनिवार - नागपंचमी
- 27 जुलाई, सोमवार - श्रावण सोमवार व्रत,
गोस्वामी तुलसीदास जयंती
- 30 जुलाई, गुरुवार - पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)
- 31 जुलाई, शुक्रवार - दामोदर द्वादशी

शुभ मुहूर्त जुलाई 2020

- 2 जुलाई, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 7.30, दिन में 12.05 से 13.40)
- 5 जुलाई, रविवार- पूंजी निवेश, गुरुपूजन (सवेरे 9.00 से 12.15 दिन में)
- 6 जुलाई, सोमवार - प्रसूति का स्नान, दक्षिण यात्रा (सवेरे 9.00 से 10.00, दिन में 15.15 से 18.30)
- 7 जुलाई, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना, दक्षिण यात्रा (सवेरे 10.30 से 13.15 दिन में)
- 8 जुलाई, बुधवार - गृहारंभ, भूमिपूजन (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)
- 9 जुलाई, गुरुवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12.15 से 13.45)
- 11 जुलाई, शनिवार - नवीन व्यापार (सवेरे 7.30 से 9.30)
- 12 जुलाई, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार, उत्तर यात्रा (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)
- 13 जुलाई, सोमवार - कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 10.30, सायं 16.30 से 18.30)
- 14 जुलाई, मंगलवार - पूंजी निवेश (दिन में 11.30 से 13.30)
- 15 जुलाई, बुधवार - पूंजी निवेश (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)
- 16 जुलाई, गुरुवार - नामकरण (दिन में 12.15 से 13.35)
- 17 जुलाई, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, कूपारंभ, अन्नप्राशन, जीर्णगृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, उत्तर की यात्रा नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.35)
- 18 जुलाई, शनिवार - नवीन व्यापार, पश्चिम और दक्षिण यात्रा (दिन में 13.35 से 16.45)
- 21 जुलाई, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 10.30 से 13.35)
- 23 जुलाई, गुरुवार - कूपारंभ (दिन में 12.05 से 13.35)
- 24 जुलाई, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.40 के बीच)
- 25 जुलाई, शनिवार - नवीन व्यापार (दिन में 13.35 से 16.35)
- 26 जुलाई, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार, उत्तर की यात्रा (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)
- 27 जुलाई, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, जीर्णगृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 7.15 के बीच, सायं 18.00 से 19.30)
- 29 जुलाई, बुधवार - नामकरण, कूपारंभ, अन्नप्राशन, गृहारंभ भूमिपूजन, जीर्णगृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से दिन में 12.15 तक)
- 30 जुलाई, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, कूपारंभ, जीर्णगृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, उत्तर पश्चिम की यात्रा (सवेरे 9.15 से 12.15)
- 31 जुलाई, शुक्रवार - खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.30)





त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त जुलाई से सितंबर 2020

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

अगस्त 2020 के व्रत पर्व

- 1 अगस्त, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत
- 3 अगस्त, सोमवार - स्नानदान व्रत की पूर्णिमा, रक्षाबंधन पर्व, श्रावणी उपाकर्म
- 4 अगस्त, मंगलवार - भाद्रपद मास आरंभ
- 6 अगस्त, गुरुवार - कजली तीज व्रत
- 7 अगस्त, शुक्रवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत
- 8 अगस्त, शनिवार - रक्षापंचमी
- 9 अगस्त, रविवार - हलषष्ठी/ललही छठ
- 11 अगस्त, मंगलवार - श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त)
- 12 अगस्त, बुधवार - श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव) गोकुलाष्टमी, बुधाष्टमी पर्व
- 15 अगस्त, शनिवार - जया एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव), स्वतंत्रता दिवस पर्व
- 16 अगस्त, रविवार - प्रदोष व्रत
- 18 अगस्त, मंगलवार - श्राद्ध की अमावस्या
- 19 अगस्त, बुधवार - स्नानदान की अमावस्या
- 21 अगस्त, शुक्रवार - हरतालिका तीज व्रत, गौरी तृतीया
- 22 अगस्त, शनिवार - गणेश चतुर्थी पर्व
- 23 अगस्त, रविवार - ऋषि पंचमी पर्व
- 24 अगस्त, सोमवार - लोलार्क षष्ठी व्रत
- 25 अगस्त, मंगलवार - अपराजिता सप्तमी/संतान सप्तमी
- 26 अगस्त, बुधवार - श्रीराधाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत, आरंभ
- 27 अगस्त, गुरुवार - श्री चन्द्रनवमी
- 28 अगस्त, शुक्रवार - दशावतार व्रत
- 29 अगस्त, शनिवार - पद्मा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)
- 30 अगस्त, रविवार - वामन द्वादशी व्रत
- 31 अगस्त, सोमवार - अनन्त चतुर्दशी व्रत

शुभ मुहूर्त अगस्त 2020

- 2 अगस्त, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.30 से 12.15 के बीच)
- 3 अगस्त, सोमवार - अन्नप्राशन (सवेरे 9.30 से 10.30)
- 4 अगस्त, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना, पूर्व एवं दक्षिण की यात्रा (दिन में 11.30 से 13.30)
- 5 अगस्त, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.15)
- 6 अगस्त, गुरुवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ (दिन में 12.00 से 13.30, सायं 6.00 से 7.15)
- 7 अगस्त, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान (सूर्योदय से सवेरे 11.00 तक)
- 8 अगस्त, शनिवार - नवीन व्यापार, पश्चिम उत्तर यात्रा (दिन में 13.30 से 16.30)
- 9 अगस्त, रविवार - नवीन व्यापार (सवेरे 10.00 से 12.15 दिन में)
- 10 अगस्त, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 7 बजे सायं 16.30 से 21.30)
- 13 अगस्त, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन (दिन में 12.15 से 13.35)
- 14 अगस्त, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सायं 16.30 से 18.30)
- 15 अगस्त, शनिवार - पश्चिम दक्षिण की यात्रा (दिन में 13.30 से 15.30)
- 20 अगस्त, गुरुवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 12.15 से 13.35)
- 21 अगस्त, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, उत्तर की यात्रा (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच)
- 23 अगस्त, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)
- 24 अगस्त, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.15 से 10.35)
- 25 अगस्त, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन)
- 28 अगस्त, शुक्रवार - कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच)
- 29 अगस्त, शनिवार - नवीन व्यापार (दिन में 13.35 से 16.15)
- 30 अगस्त, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार, पूर्व एवं दक्षिण की यात्रा (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)
- 31 अगस्त, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, पश्चिम दक्षिण की यात्रा (सवेरे 9.00 से 10.15, सायं 16.30 से 18.15)



त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त जुलाई से सितंबर 2020

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

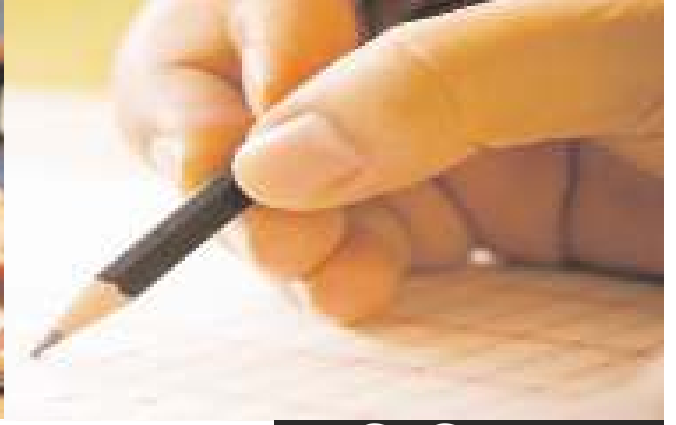
सितंबर 2020 के व्रत पर्व

- 1 सितम्बर, मंगलवार - व्रत की पूर्णिमा, हिन्दी दिवस
- 2 सितम्बर, बुधवार - स्नानदान की पूर्णिमा
- 3 सितम्बर, गुरुवार - शुद्ध अश्विन कृष्णपक्ष आरंभ/प्रतिपदा श्राद्ध
- 4 सितम्बर, शुक्रवार - द्वितीया तिथि श्राद्ध
- 5 सितम्बर, शनिवार - संकष्टी चतुर्थी, शिक्षक दिवस, तृतीया तिथि श्राद्ध
- 6 सितम्बर, रविवार - चतुर्थी तिथि श्राद्ध
- 7 सितम्बर, सोमवार - पंचमी तिथि श्राद्ध
- 8 सितम्बर, मंगलवार - चंद्रषष्ठी/ षष्ठी तिथि श्राद्ध
- 9 सितम्बर, बुधवार - सप्तमी तिथि श्राद्ध
- 10 सितम्बर, गुरुवार - अष्टमी तिथि श्राद्ध/ महालक्ष्मी व्रत
- 11 सितम्बर, शुक्रवार - नवमी तिथि श्राद्ध/मातृनवमी श्राद्ध
- 12 सितम्बर, शनिवार - दशमी तिथि श्राद्ध
- 13 सितम्बर, रविवार - एकादशी तिथि श्राद्ध/ इंदिरा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)
- 14 सितम्बर, सोमवार - द्वादशी तिथि श्राद्ध
- 15 सितम्बर, मंगलवार - भौम प्रदोष व्रत/ त्रयोदशी तिथि श्राद्ध
- 16 सितम्बर, मंगलवार - चतुर्दशी तिथि श्राद्ध
- 17 सितम्बर, गुरुवार - स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या तिथि/ सर्वपितृ अमावस्या
- 18 सितम्बर, शुक्रवार - अश्विन शुक्ल पक्ष आरंभ/ पुरुषोत्तम मास आरंभ
- 20 सितम्बर, रविवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत
- 24 सितम्बर, गुरुवार - कालाष्टमी
- 27 सितम्बर, रविवार - एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)
- 29 सितम्बर, मंगलवार - भौम प्रदोष व्रत

शुभ मुहूर्त सितंबर 2020

- 2 सितम्बर, बुधवार - अन्नप्राशन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)
- 3 सितम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 11.15 से 13.30)
- 4 सितम्बर, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.15)
- 6 सितम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान, उत्तर दिशा की यात्रा (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)
- 9 सितम्बर, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (दिन में 15.15 से 18.15 के बीच)
- 10 सितम्बर, गुरुवार - खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, पश्चिम दक्षिण यात्रा (दिन में 12.15 से 13.35)
- 13 सितम्बर, रविवार - उत्तर एवं ईशान कोण की यात्रा (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)
- 14 सितम्बर, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना, (सवेरे 9.15 से 10.30)
- 17 सितम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 13.30 दिन)
- 18 सितम्बर, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार, उत्तर एवं पूर्व की यात्रा (सूर्योदय से सवेरे 10.30)
- 19 सितम्बर, शनिवार - नवीन व्यापार (दिन में 13.30 से 16.30)
- 21 सितम्बर, सोमवार - प्रसूति का स्नान, उत्तर एवं पूर्व की यात्रा (सवेरे 9.00 से 10.15)
- 22 सितम्बर, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11.15 से 12.30)
- 24 सितम्बर, गुरुवार - खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 7.30 के बीच)
- 25 सितम्बर, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच)
- 26 सितम्बर, शनिवार - नवीन व्यापार, दक्षिण की यात्रा (दोपहर 13.30 से 16.30)
- 27 सितम्बर, रविवार - पूर्व एवं दक्षिण की यात्रा (सवेरे 9.15 से 12.15)
- 28 सितम्बर, सोमवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, पश्चिम की यात्रा (सवेरे 9.15 से 10.15)





आपके पत्र

कोरोना महामारी के दौरान लाक डाउन में मोबाईल पर तथा वाट्सएप पर जीवन वैभव के बारेमें पाठकों ने प्रतिक्रिया और प्रतिक्रिया व्यक्त की है जोकि निम्नानुसार प्रस्तुत है।

संपादक महोदय

देश में लॉकडाउन होने के बाद भी जीवन वैभव की पीडीएफ प्रति आपके द्वारा प्रेषित की गई जिसके लिए हम आपका आभार व्यक्त करते हैं। वैभव दर्शन के अंतर्गत दूसरों की भूल देखने की प्रवृत्ति नामक आलेख पत्रिका के संस्थापक संपादक का बहुत ही ज्ञान प्रतीत हुआ इसी प्रकार के ज्ञानवर्धक आलेख जरूर प्रेषित करते रहें। पत्रिका को नियमित जरूर रखे ऐसी ज्ञान वर्धक पत्रिकाएं आज के समय में मिलना दुर्लभ है।

- गिरीश गोयल, राउ

संपादक महोदय

जीवन वैभव का अप्रैल से जून 2020 का पीडीएफ अंक पढ़ने को प्राप्त हुआ बहुत रुचिकर ज्योतिष विषयक जानकारी दी गई है इसमें श्री एसएस लाल द्वारा दी गई सुखमय दांपत्य जीवन और ज्योतिष विषयक आलेख बहुत ज्ञान दायक प्रतीत हुआ जोकि आज के पारिवारिक विषमताओं के समय में ग्रहों द्वारा पारिवारिक सुख की वृद्धि करने में सहायक होगा आपका बहुत-बहुत आभार।

शिवनारायण मुन्या, सुवासरा मण्डी

संपादक श्री पांडे जी

जीवन वैभव का अप्रैल 2020 अंक प्राप्त नहीं हुआ। हम इस प्रतिष्ठित पत्रिका की प्रतिक्रिया करते हैं। क्योंकि इसमें मुहूर्त, व्रत, पर्व, ज्ञान दायक जानकारी के साथ ही त्रैमासिक भविष्यफल भी प्राप्त होता है। अनुरोध है कि कृपया हमें नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहने का कष्ट करें।

- चांदमल जैन, जावरा

श्री गिरीश जी और श्री शिवनारायण मुन्या जी आपके द्वारा दूरभाष पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने का बहुत-बहुत आभार। आपने लिखा कि इस प्रकार की ज्ञानवर्धक पत्रिकाएं पढ़ने को नहीं मिल

प्रतिक्रियाएं

पाती है यह बात सही है क्योंकि आज के समय में जहां एक और धन कमाने की होड़ लगी हुई है वहां केवल ज्ञान वृद्धि के लिए साहित्य प्रदाय करना पाठकों के लिए तथा प्रकाश को के लिए भी अनुकूल नहीं है क्योंकि इस प्रकार कि साहित्य के प्रकाशन में होने वाला व्यय की पूर्ति भी होना संभव नहीं है। आप जैसे विरले व्यक्ति ही ज्ञानवर्धक साहित्य को पढ़ने में रुचि रख रहे हैं। भागदौड़ की जीवन में व्यक्ति को ऐसे साहित्य पढ़ने का समय नहीं मिल पाता तथा परिवार को भी ज्ञान वर्धन नहीं हो पाता जिससे कि नई पीढ़ी को हमारी भारतीय संस्कृति की जानकारी नहीं हो पा रही है इसके लिए आप और हमारा प्रयास की पर्याप्त नहीं होगा हमें धीरे-धीरे पाठकों की संख्या में वृद्धि करनी होगी आप जैसे प्रबुद्ध पाठक ही यहपुनीत कार्य कर सकेगा। पत्रिका के पाठकों से अपेक्षा है कि जीवन वैभव को जैसा कि आपने पाया है, अपने साथियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें जिससे कि उनके परिवार में ज्ञान की अभिवृद्धि हो सके तथा जीवन वैभव परिवार के सदस्यों की भी वृद्धि होसके तथा इस पुनित कार्य में आप भी सहभागी हो सके। धन्यवाद।

- सहायक सम्पादक

आदरणीय श्री जैन साहब आपकी जीवन वैभव के बारे में प्रतीक्षा होना तथा उत्तर प्राप्त नहीं होने की जानकारी प्राप्त हुई महामारी के दौरान सभी सेवाएं बंद होने से पत्रिका समय पर प्रकाशित नहीं हो पाई जिसकी पीडीएफ प्रति सभी उपलब्ध व्हाट्सएप सदस्यों को भेजी गई थी हो सकता है ,आपको प्राप्त नहीं हो सकी हो। जीवन वैभव की निरंतरता जारी है तथा भविष्य में भी रहेगी। हमारा संकल्प की यही है कि अपने पाठकों को ज्योतिष के द्वारा सही मार्गदर्शन प्रदाय कर सकें अब आपको निरंतर पत्रिका प्रेषित होती रहेगी। आपका जीवन वैभव में प्रकाशित ज्ञान प्रति ऐसा ही लगाव बना रहे शुभ कामनाओं सहित

सहायक सम्पादक





जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सदस्यता का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक, अरेरा कालोनी, शाखा भोपाल के जीवन वैभव खाता क्रमांक 50159870448 में जमा करते हुए बैंक की जमा पर्ची (स्लिप) सदस्यता आवेदन पत्र के साथ प्रेषित कर दें। यदि इलाहाबाद बैंक के अतिरिक्त अन्य बैंक से शुल्क जमा कराये जाने की स्थिति में एन.ई.एफ.टी. (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर) माध्यम से निम्नानुसार शुल्क जमा कराएं -

खाता क्रमांक : 50159870448

खाते का नाम : जीवन वैभव

आय.एफ.एस.सी. कोड : ALLA 0210197

यदि आप रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका प्राप्त करना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क पृथक से सदस्यता की राशि के साथ जोड़कर प्रेषित कर दें। अन्यथा साधारण डाक से पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दशाएँ अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता निर्यामित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए, महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662; ईमेल: hep2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम

डाक का पूरा पता

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल

सदस्यता आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण 1800/- 300/- 100/-

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक दिनांक

चैक क्रमांक दिनांक

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका "जीवन वैभव" के बारे में आपकी राय:-

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:

जीवन वैभव

15-ए, महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662

ईमेल: hep2002@gmail.com

नोट: उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।



॥ जाऊँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे ॥



श्री रामचन्द्राय नमः

जाऊँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे।
काको नाम पतित-पावन जग,
केहि अति दीन पियारे॥1॥
कौने देव बराड़ विरद-हित,
हठि हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पवान, विटप जड़,
जवन कवन सुर तारे॥2॥
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब,
माया बिबस विचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु,
कहा अपन पौ हारे॥3॥

हे प्रभु! आपके चरणों को छोड़कर और कहाँ जाऊँ? संसार में “पतित पावन” नाम किसका है? (आपकी भाँति) दीन दुखियारे किसे बहुत प्यारे हैं?॥1॥

आज तक किस देवता ने अपने बाने को रखने कि लिए हठपूर्वक चुन-चुन कर दुखियारों, गरीबों (नीचों) का उद्धार किया है? किस देवता ने पक्षी (जटायु), पशु (ऋक्ष-वानरादि), व्याघ्र (वाल्मीकी), पत्थर (अहिल्या), जड़ वृक्ष (यमलार्जुन) और यवनों का उद्धार किया है?॥2॥

देवता, दैत्य, मुनि, नाग, मनुष्य आदि सभी बैचारे माया के वशीभूत हैं। स्वयं माया मोह से बँधा हुआ दूसरों के बन्धन को कैसे खोल सकता है, इसलिए तुलसीदास जी कहते हैं कि अपने आपको उन लोगों के हाथों में सौंपकर क्या करें? अर्थात् आपके चरणों के अलावा कोई दूसरा नहीं है जिसकी शरण में जा सकें॥3॥

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है—

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते हैं। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता रू.100/—, त्रैवार्षिक रू. 300/—, आजीवन सदस्यता रू. 1800/—

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता "जीवन वैभव" के नाम से अरेरा कॉलोनी की इलाहाबाद बैंक के खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड ALLA0210197 के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।



- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी हैं, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र—निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- वंदना, अमृतवाणी, वैभवदर्शन, गीता माता, उचितआहार, चिकित्सा, धार्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपलब्ध रहती है।
- महापुरुषों द्वारा दिए गए आशीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

कार्यालय का पता **व्यवस्थापक जीवन वैभव**

15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन-1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : hcp2002@gmail.com